मार्च, 2022 वर्ष : 43 अंक : 03 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

परम पवन दलाई लामा के साथ चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जिरी ओबरफेल्ज़र

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

मार्च, 2022 वर्ष : 43 अंक : 03

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के प्रति संवेदना संदेश

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

ज्ञान प्राप्ति महाप्रतिहार्य पर्व दिवस पर प्रवचन 1

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व में तिब्बतियों ने तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस का ६३वां वर्षगांठ मनाई 2

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा १९८९ के शांतिपूर्ण आंदोलन की याद में प्रार्थना सभा का आयोजन 3

सिक्योंग ने अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के निधन पर शोक व्यक्त किया 4

सिक्योंग ने अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के निधन पर शोक व्यक्त किया 5

चीनी पुलिस ने लोकप्रिय तिब्बती लामा के अंतिम संस्कार पर प्रतिबंध लगाया 6

प्रख्यात लेखक एवं पर्यावरणविद् कुंचोक त्सेफेल १३ साल जेल में रहने के बाद रिहा हुई। 7

तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अभूतपूर्व कड़े दमन के बीच आत्मदाह करनेवाले छेवांग नोरबू का निधन 8

चीनी भाषा में पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं के साथ तिब्बती स्कूल वर्ष शुरु हुई 9

चीन लर्निंग ऐप्स में तिब्बती भाषा के उपयोग और स्ट्रीमिंग सेवाओं पर प्रतिबंध लगाया 10

आईटीसीओ ने नागपुर में तिब्बत समर्थक समूह के सदस्यों के साथ कार्यक्रम आयोजित की 11

समाचार -

महाराष्ट्र के अमरावती में आयोजित तीसरे अखिल भारतीय आंबेडकर महिला साहित्य सम्मेलन में तिब्बती प्रतिनिधियों ने भाग ली 12

भारत के तिब्बत समर्थक समूहों ने ६३वां तिब्बती \राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस मनाई 13

गुरुकुल इंटर कॉलेज, हजारीबाग में 'तिब्बत के लिए एक दिन' कार्यक्रम का आयोजन 14

कामराव गापा तिब्बती समुदाय ने हिमाचल के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया 15

नेपाल स्थित अन्य देशों के राजदूतों ने तिब्बती लोसार उत्सव में भाग ली 16

स्पीकर के नेतृत्व में तिब्बती सांसदों ने यूएसएआईडी प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की 17

हम तिब्बत को आज़ाद करने की संकल्प से अपना समर्थन देने आए हैं': चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जिरी ओबरफेल्ज़र 18

राज्यसभा सांसद अमरेंद्र धारी सिंह निर्वासित तिब्बती संसद में आए 19

तिब्बती प्रतिनिधि ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सत्र के दौरान तिब्बत को याद किया 20

तिब्बती जनक्रांति दिवस की ६३वीं वर्षगांठ पर ताइवान के संसदीय मानवाधिकार आयोग और तिब्बत के संसदीय समूह का वक्तव्य 21

ल्हासा में तिब्बती गायक के आत्मदाह से चीनी उत्पीड़न के बारे में पता चलता है 22

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स
1/6 , बेसमेंट
विक्रम विहार,
लाजपत नगर - 4
नई दिल्ली -110024
से मुद्रित

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

कालदेन छोमो

अपनी बात

तिब्बती जनक्रांति दिवस पर मध्यममार्ग नीति को मिला जबर्दस्त सर्मथन

निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि व्यवहार में तिब्बतियों की लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार है, के सिक्योंग पेंपा छेरिंग के संदेश में मध्यममार्ग के आधार पर चीन सरकार के साथ फिर वार्ता के प्रारंभ की मांग को अन्तरराष्ट्रीय समर्थन बढ़ते जाना उत्साहवर्धक है। तिब्बती जनक्रांति दिवस (१० मार्च,२०२२) पर आयोजित समारोह में सरकार के साथ परम पावन दलाई लामा तथा निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रतिनिधियों के बीच वार्ता पुनः प्रारम्भ कराने की मांग प्रशंसनीय है। तिब्बत समस्या का शांतिपूर्ण एवं सर्वस्वीकार्य समाधान पारस्परिक संवाद से ही होगा। इस वार्ता का आधार हो "मध्यम मार्ग" नीति। इस नीति के अनुसार चीन सरकार अपनी भौगोलिक एकता-अखंडता एवं संप्रभुता का संरक्षण करते हुए तिब्बत को "वास्तविक स्वायत्तता" प्रदान करे। इससे तिब्बतियों को चीन के अधीन स्वयशसन का अधिकार मिल जायेगा। तिब्बत की वैदेशिक तथा प्रतिरक्षा व्यवस्था चीन सरकार संभालेगी। कृशि, शिक्षा आदि अन्य विशय तिब्बतियों को सौंपे जायेंगे। यह मध्यम मार्ग नीति चीन के संविधान और राश्ट्रीयता कानून के अनुकूल है। दलाई लामा और निर्वासित तिब्बत सरकार तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग छोड़कर सिर्फ वास्तविक स्वायत्तता के लिए संघर्शषील हैं। उनका मत है कि तिब्बत की पहचान बचाने के लिए एकमात्र उपाय यही है।

चीन के वुहान से विश्वभर में फैली कोरोना महामारी में थोड़ी कमी आने के बाद तिब्बती जनक्रांति दिवस का सार्वजनिक आयोजन दलाई लामा के हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला स्थित मंदिर- प्रागण में संभव हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद से चेक गणराज्य की सीनेट के उपसभापति ने तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों को आष्वस्त किया कि उनका देश चीनी दबाव के बावजूद अपना सहयोग जारी रखेगा। वे यही बताने चेक गणराज्य से धर्मशाला आये हैं। कार्यक्रम के विषेश अतिथि एवं राज्य सभा सांसद अमरेंद्रधारी सिंह की उपस्थिति से पुनः प्रमाणित हो गया कि तिब्बत का सवाल तिब्बत के पड़ोसी भारतीयों का सवाल बन चुका हैं।

विश्व जनमत का चीनी हठधर्मिता तथा तिब्बत में जारी दमन के विरोध में प्रभावी होना चीन के लिये नुकसानदेह है। तिब्बत में चीन की अमानवीय दमनकारी नीति का ही परिणाम है कि गत कुछ वर्शों में ही डेढ़ सौ से ज्यादा तिब्बती आंदोलनकारी अपने हाथों अपने ही शरीर में आग लगाकर आत्मदाह कर चुके। मार्च २०२२ में भी प्रसिद्ध युवा तिब्बती गायक २५ वर्शीय छेवांग नोर्बू ने भी तिब्बत में दलाई लामा तथा लोकतंत्र की वापसी की मांग करते हुए आत्मदाह कर लिया। शांतिपूर्ण एवं अहिंसक तिब्बती आंदोलनकारियों के आत्मबलिदान के बाद चीन सरकार उनके परिजनों को प्रताड़ित कर रही है तथा उन्हें जेल भेज रही है। दलाई लामा, निर्वासित तिब्बत सरकार तथा तिब्बत समर्थकों की लगातार अपील के बावजूद तिब्बत में आत्मदाह की घटनायें चीनी अत्याचार के प्रमाण हैं।

तिब्बत में मानवाधिकारों के संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरण की सुरक्षा के संदर्भ में जारी तिब्बतन एडवोकेसी कैम्पेन के परिणामस्वरुप विष्वस्तर पर चीन बेनकाब हो चुका है। तिब्बती सांसद भारत सहित विभिन्न देशो में उनके जनप्रतिनिधियों, विशेषज्ञों, मीडियाकर्मियों, नीतिनिर्माताओं, अधिकारियों तथा जनता को तिब्बत की दुर्दशा से अवगत करा रहे हैं। इस कैम्पेन से तिब्बत में चीनी साज़िश का पर्दाफास हो चुका है। तिब्बत में सुनियोजित चीनी वर्चस्व के कारण तिब्बती अल्पसंख्यक होकर चीनियों के गुलाम और मजदूर बन गये। तिब्बत स्थित बौद्ध स्थल बर्बाद हो गये। तिब्बतियों को पूजा-पाठ तथा दलाई लामा की तस्वीर रखने से भी वंचित होना पड़ा है। इस संकटपूर्ण स्थिति में भी तिब्बती जनक्रांति दिवस के अवसर पर विश्व के अनेक देशो में कई कार्यक्रमों के सफल आयोजन से स्पश्ट है कि संघर्श में विष्वसमुदाय तिब्बतियों के साथ है। भारत में चीनी दूतावास के समक्ष विरोध प्रर्दशन हुआ। व्याख्यान, सम्मेलन, अनशन आदि द्वारा भारतीय तिब्बत समर्थकों ने भी संकेत दे दिया कि भारतीय जनता चीनी अत्याचार के विरोध में एकजुट है। दलाई लामा भारत को तिब्बत का गुरु तथा तिब्बत को भारत का चेला कहते हैं, क्योंकि भारत से ही बौद्ध दर्शन तिब्बत गया था। इस प्रकार तिब्बत पर संकट भारत के लिये खतरा है।

तिब्बत पर अवैध चीनी आधिपत्य का ही दुश्परिणाम है कि भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान को चीन से खतरा है। स्वतंत्र तिब्बत को हड़पने के बाद साम्राज्यवादी चीन अपने अन्य पड़ोसी देषों के भू-भाग कब्जाने में लगा है। चीन की दीवार ही चीन की भौगोलिक सीमा है। इसके बाहर सब अवैध कब्जा है। वर्तमान भारत सरकार चीन को सटीक जवाब दे रही है। ऐसा करना जरूरी है। चीन के साथ पारस्परिक वार्ता में भारत सरकार तिब्बत के सवाल को अवष्य उठाये। भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान के लिये यह जरूरी है।

खुषी की बात है कि कोरोना महामारी के बाद दलाई लामा ने पहली बार मार्च २०२२ की पूर्णिमा को सार्वजनिक दर्शन-प्रवचन दिये हैं। उनकी प्रेरणा-प्रोत्साहन-आशीर्वाद से तिब्बती संघर्श अहिंसक एवं शांतिपूर्ण है। उन्होंने अपने आप को पूर्णतः स्वस्थ बताया तथा आष्वस्त किया कि वे सौ वर्श से अधिक जीवित रहेंगे। नोबल शांति पुरस्कार तथा विभिन्न देशो के सर्वोच्च पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत दलाई लामा को उपनिवेषवादी चीन सरकार विघटनकारी एवं आतंककारी समझती है। वह उनके पुनर्जन्म और उत्तराधिकारी की चयन-प्रकिया के संबंध में पूर्णतः अस्वीकार्य अफवाहें फैलाती है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• ज्ञान प्राप्ति महाप्रतिहार्य पर्व दिवस पर प्रवचन

dalailama.com, १८ मार्च२०२२

परम पावन दलाई लामा ने महामारी के बाद पहली बार सार्वजनिक रूप से प्रवचन

धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश। परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती जल-बाघ वर्ष के पन्द्रहवें दिन भगवान बुद्ध के जीवन की एक महान घटना ज्ञान प्राप्ति की महाप्रतिहार्य पूर्व मनाने के लिए तिब्बती मुख्य मंदिर त्सुगलाखांग में प्रवेश किया था। कोविड महामारी से उत्पन्न व्यवधान के कारण जनवरी- २०२० में बोधगया में सार्वजनिक तौर पर दर्शन देने के बाद परम पावन की यह पहली सार्वजनिक उपस्थिति है।

आज का कार्यक्रम १४०९ में ल्हासा के जोखांग में जे त्सोंखापा द्वारा शुरू किए गए महान प्रार्थना उत्सव का हिस्सा था, जो आज भी अनवरत जारी है। त्योहार के प्रत्येक दिन को चार सत्रों में विभाजित किया गया थाः पहला सुबह की प्रार्थना, दूसरा प्रवचन- सत्र, तीसरी दोपहर की प्रार्थना और चौथी तीसरे प्रहर की प्रार्थना। त्योहार में प्रवचन-सत्र के दौरान आर्यशूर की जातकमाला से चौंतीस जातक कथाओं का पाठ किया जाता है। ज्ञातव्य है कि जातक कथाएं बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां है जिसका संचायन चौथी शताब्दी में काव्यात्मक रूप से किया गया था। त्योहार के पंद्रहवें दिन पूर्णिमा को चोंखापा ने सभी प्राणियों के कल्याण हेतु ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा से बोधिचित्त के जागरण के लिए एक बड़ा सार्वजनिक समारोह भी किया।

परम पावन दलाई लामा ने मंदिर में स्थित सिंहासन पर विराजमान होने के बाद अपना प्रवचन शुरू कियाः

'मैंने मेडिकल चेक-अप के लिए अभी दिल्ली जाने के बारे में सोचा था। हालांकि, मैं अस्वस्थ महसूस नहीं करता। वास्तव में, मैं किसी भी चीज के लिए फिट महसूस करता हूं, इसलिए मैंने नहीं जाने का फैसला किया। आमतौर पर सर्दियों के दौरान मैं बोधगया जाता हूं। लेकिन इस साल भी मैंने धर्मशाला में आराम करने और चीजों को आसान बनाने का फैसला किया। मैंने एक भविष्यव्यकता (तिब्बतीः मो) भी फेंका जो यह दर्शाता है कि यह करना बेहतर होगा।

तो आज मैं जातकमाला से पाठ सुनाने जा रहा हूं।

अब प्रश्न यह है कि बुद्ध प्राणिमात्र को कैसे लाभ पहुंचाते हैं? वे अहितकर कर्मों को जल से नहीं धोते और न अपने हाथों से प्राणियों के कष्ट दूर करते हैं और न ही अपनी अनुभूति को दूसरों में प्रतिरोपित करते हैं। वह दुखी प्राणियों के मन को शांत करने के साधन के रूप में इस तरह के सत्य का उपदेश देकर, अपने द्वारा अनुभव की गई वास्तविकता को प्रकट करके प्राणियों को मुक्त करते हैं।

'बुद्ध ने पहले चार आर्य सत्यों की शिक्षा दी। फिर बाद में गिद्धकूट पर्वत के शिखर पर उन्होंने अपने सिद्धांत के सार रूप में सम्यक ज्ञान की शिक्षाओं को प्रस्तुत किया, जिन्हें हृदय सूत्र में प्रस्तुत किया गया है और जिसका हम नियमित रूप से पाठ करते हैं।'

'मैं शून्य का उपदेश देने के लिए उसका चिंतन करने की पूरी कोशिश करता हूं, जो मुझे नकारात्मक भावनाओं से निपटने में मददगार लगती है।'

'विनाशकारी भावनाएं दुख का कारण बनती हैं। यदि आप उन्हें कम कर सकते हैं तो आप स्वाभाविक रूप से शांति महसूस करेंगे। हम तिब्बतियों का अवलोकितेश्वर और जागृत मन के साथ एक विशेष संबंध है। इसका इरादा अन्य प्राणियों की मदद करना है और बुद्धत्व तक पहुंचना है।'

इसके बाद 'हृदय सूत्र' का पाठ हुआ, जिसमें लामाओं की वंश परंपरा की प्रार्थना की जाती है। इसमें पिछले कई दलाई लामाओं का उल्लेख है। अंत में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल और उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग ने मिलकर परम पावन को एक मंडल भेंट किया।

इसके बाद सभी ने मक्खन वाली चाय और खीर का आनंद लिया। इस दौरान परम पावन ने तिब्बत में एक अवसर का स्मरण किया जब एक समारोह में भाग लेने वाले एक गणमान्य व्यक्ति की मूंछ पर चावल का एक दाना चिपक गया था। इस अशुद्ध स्थिति को उजागर करके उन महोदय को शर्मिंदा करने के बजाय एक परिचारक ने सहज रूप से अपनी समझ वाली कविता की कुछ पंक्तियों का उच्चारण किया और उनकी मूंछें साफ कर दीं।

'मैं उल्लेख कर रहा था कि तिब्बतियों का अवलोकितेश्वर के साथ एक विशेष संबंध है। हम इसे सम्राट सोंगत्सेन गोम्पो के संबंध में देखते हैं, जो बुद्धिमान और कुशल राजा थे। उन्होंने तिब्बती लिपि बनाने का फैसला किया। हालांकि, चीन और तिब्बती के बीच संस्कृति और घनिष्ठ संबंधों के बावजूद, उन्होंने इसे चीनी परंपरा के आधार पर तैयार नहीं करवाया, बल्कि इसे तैयार करने के लिए संस्कृत देवनागरी लिपि को मॉडल के रूप में चुना था। यह लिपि अभी भी संपूर्ण तिब्बत में समान उपयोग में है।

'इसके बाद आठवीं शताब्दी में राजा ठ्रिसोंग देत्सेन ने भारत से आचार्य शान्तरक्षित को आमंत्रित किया, जिन्होंने तिब्बत में उस शिक्षा की स्थापना की जिसे बुद्ध ने 'गहन और शांतिपूर्ण, जटिलता से मुक्त, असंबद्ध प्रकाश-एक अमृत-समान धर्म' के रूप में वर्णित किया। इसी समय हमने बौद्ध साहित्य का तिब्बती में अनुवाद करना शुरू किया। तिब्बती संस्कृति को खत्म करने के हालिया प्रयासों और इसके साथ बुद्ध की शिक्षाओं के बावजूद हमने बौद्ध परंपरा को जीवित रखा है। इसका एक कारण अवलोकितेश्वर में तिब्बतियों का अटूट विश्वास है। और जैसे-जैसे समय बीत रहा है, चीन में अधिक से अधिक लोग तिब्बती बौद्ध धर्म में रुचि ले रहे हैं।'

हमने इस जिस शिक्षण को संरक्षित किया है वह वास्तविकता के अनुरूप है। दुनिया में कई धर्म हैं, लेकिन बौद्ध धर्म केवल तर्क और कारण पर आधारित है। अगर मैं इसमें अपनी भूमिका के बारे में सोचूं तो मैं कुंबुम मठ के पास अमदो प्रांत में पैदा हुआ था। अक्षर "अ, क, म" ल्हामो लात्सो झील की सतह पर परिलक्षित होते हैं, जिससे मेरी खोज हुई। उसके बाद मैं मध्य तिब्बत आया जहां मैं बौद्ध धर्म के अध्ययन और अन्वेषण में गहरी ध्यान केंद्रित किया था। इसके बाद तिब्बत से निर्वासन में मैं विज्ञान की पृष्ठभूमि वाले कई लोगों से मिला हूं और उनमें से कई ने मेरे द्वारा बौद्ध धर्म के मन और भावनाओं के बारे में कही गई बातों में रुचि दिखाई है।

'हम यहां इस विशेष अवसर पर खुद को यह याद दिलाने के लिए एकत्र हुए हैं कि बुद्ध की शिक्षाओं का यह खजाना केवल अध्ययन और साधना के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है और ऐसा करने से हम दुनिया के कई हिस्सों में अन्य लोगों को लाभान्वित कर सकते हैं। 'मध्यम मार्ग में प्रवेश' यह स्पष्ट करता है कि वसुबंधु और दिग्नाग जैसे विद्वान आचार्य भी शून्यता की शिक्षा को पूरी तरह से नहीं समझ पाए थे। 'यह शिक्षा, जो कि तर्क और कारण पर आधारित है, हमें भीतर की विनाशकारी भावनाओं का सामना करने में लाभ देती है।'

स्कूली बच्चों को संबोधित करते हुए परम पावन ने उनसे कहा कि उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू से तिब्बतियों के लिए समर्पित स्कूलों की निर्माण करने का अनुरोध किया, जहां तिब्बती विद्यार्थी तिब्बती भाषा में अध्ययन कर सकें। उन्होंने कहा कि यद्यपि वे शारीरिक रूप से निर्वासन में हैं लेकिन भारत तथा अन्य देशों में रह रहे तिब्बती लोग अपनी परंपराओं, धर्म और संस्कृति के निकट महसूस करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि इस परंपरा को संरक्षित रखने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं और आप सब भी इस विरासत को संरक्षित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए।

आगे उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि वह बुजुर्ग हो रहे हैं लेकिन उन्होंने सभी को यह अश्वासन दिया कि वे एक दशक या उससे अधिक समय तक जीवीत रहेंगे और लोगों

को नेतृत्व तथा प्रोत्साहित करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि उनके घुटनों में चोट लगी है, लेकिन वे चलने की छड़ी पर भरोसा करते हुए नेतृत्व प्रदान करने की आश जताई है।
'हम महान प्रार्थना महोत्सव के अवसर पर यहां एकत्र हुए हैं और मैं आपसे अपने साहस को बढ़ाने की आग्रह करता हूं। आप अपने आप को बुद्ध के अनुयायी, आर्य नागार्जुन और उनके शिष्यों तथा दिग्नाग और उनके अनुयायियों के रूप में सोचें। आप जो सुनते हैं, उसपर प्रश्न पूछा करें। पूछो क्यों? स्कूलों में दर्शनशास्त्र के शिक्षकों को न केवल कविता बल्कि दार्शनिक सोच भी पढ़ाना चाहिए।'
उन्होंने ध्यान केंद्रित करते हुए कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं का सार मन को अनुशासित करना है। यह उल्लेख करते हुए कि वह सभी महान धार्मिक परंपराओं- हिंदू, ईसाई, मुस्लिम, यहूदी, सिख आदि का सम्मान करते हैं। परन्तु उन सभी धर्मों में केवल बौद्ध धर्म तर्क और कारण पर आधारित है।
उन्होंने कहा कि भारत सरकार के अतिथि के रूप में, मैं यहां निर्वासन में रहता हूं। लेकिन मेरे विचार हमेशा तिब्बत और हमारी तिब्बती सांस्कृतिक परंपराओं पर रहते हैं।'
इसके बाद बोधिचित्त के जागरण पर केंद्रित आम समारोह के दौरान परम पावन ने अपने श्रोताओं को आश्वस्त महसूस करने की सलाह दी कि वे बुद्ध के एक प्रामाणिक अनुयायी से सभी प्राणियों के लिए बुद्धत्व प्राप्त करने का संकल्प प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें अवलोकितेश्वर के अनुयायियों के रूप में अनित्यता, पीड़ा, निस्वार्थता और शून्यता से संबंधित शिक्षाओं पर चिंतन करने और इस परंपरा को जीवित रखने के लिए दृढ़ संकल्प करने के लिए प्रोत्साहित किया।
प्रवचन का समापन धन्यवाद मंडल की प्रस्तुति के साथ-साथ 'शिक्षाओं के फलने-फूलने के लिए प्रार्थना' और शुभ छंदों के पाठ के साथ हुआ।

• दलाई लामा सहित अन्य नोबेल शांति विजेताओं ने यूक्रेन में परमाणु हथियारों का उपयोग नहीं करने की मांग की

२६ मार्च२०२२, commondreams.org

दलाई लामा समेत १६ नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं ने शनिवार को संयुक्त रूप से एक पत्र जारी कर यूक्रेन पर हमले को शीघ्र समाप्त करने का आह्वान किया। इसके साथ ही रूस और नाटो दोनों सेनाओं से एक स्पष्ट प्रतिज्ञा करने की अपील की कि इस युद्ध या किसी अन्य संघर्ष में परमाणु हथियारों का प्रयोग नहीं किया जाएगा।
पत्र में यह घोषणा किया है कि, 'हम युद्ध और परमाणु हथियारों को अस्वीकार करते हैं। हम दुनिया के अपने साथी नागरिकों को आह्वान करते हैं कि वे हम सबका सामूहिक घर हमारे ग्रह को उन लोगों से बचाने के लिए हमारे साथ जुड़ें जो इसे नष्ट करने की धमकी दे रहे हैं।'
इस पत्र को १९८५ में नोबेल पुरस्कार विजेता इंटरनेशनल फिजिशियन फॉर द प्रिवेंशन ऑफ न्यूक्लियर वॉर (आईपीपीएनडब्ल्यू) और इसी तरह की एडवोकेसी के लिए २०१७ में पुरस्कार से सम्मानित इंटरनेशनल कैंपेन टू एबोलिश न्यूक्लियर वेपन्स (आईसीएएन) ने समर्थन किया है। इस पत्र पर अन्य दस लोगों ने भी हस्ताक्षर किए हैं। इनमें जॉडी विलियम्स, कैलाश सत्यार्थी और स्कॉर एरियस सांचेज़ के साथ ही १९१० में पुरस्कार से सम्मानित इंटरनेशनल पीस ब्यूरो, अमेरिकन फ्रेंड्स सर्विस कमेटी (१९४७) और पगवाश कांफ्रेंस ऑन साइंस एंड वर्ल्ड अफेसर (१९९५) भी शामिल हैं।
पत्र में आगे कहा गया है, 'यूक्रेन पर आक्रमण ने वहां के लोगों के लिए मानवीय संकट पैदा कर दिया है। इस समय पूरी दुनिया इतिहास के सबसे बड़े खतरे का सामना कर रही है। यह खतरा बड़े पैमाने पर परमाणु युद्ध का है, जो हमारी सभ्यता को नष्ट करने में सक्षम है और पृथ्वी पर विशाल पारिस्थितिक क्षति का कारण बन रहा है।'
खुले पत्र में तत्काल युद्धविराम समझौते और यूक्रेन से सभी रूसी सैनिकों की वापसी का आह्वान किया गया है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एक महीने से अधिक की लड़ाई में हजारों यूक्रेनी नागरिक मारे गए हैं और लाखों यूक्रेनी शरणार्थी बनकर देश की सीमा से भागकर पड़ोसी देशों में चले गए हैं, जबकि लाखों लोग देश के भीतर आंतरिक रूप से विस्थापित हो गए हैं।
पत्र में २७ फरवरी को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा अपनी सेना को परमाणु बलों को 'विशेष अलर्ट' पर रखने का आदेश देने के मद्देनजर युद्ध में परमाणु हथियारों के संभावित प्रयोग पर चिंता जताई गई है। परमाणु विरोधी समूह ग्लोबल जीरो द्वारा रूस के इस आशंकित कदम को तुरंत 'अस्वीकार्य और लापरवाही भरा कदम' बताते हुए इसकी कड़ी निंदा की गई है।
तब से यह चिंता बढ़ती जा रही है कि पुतिन तथाकथित 'सामरिक परमाणु हथियार' के उपयोग का सहारा ले सकते हैं। इन हथियारों को कुछ ने बड़े विनाशकारी हथियारों की तुलना में कम खतरनाक या विनाशकारी रूप में सही ठहराने की कोशिश की है। इस तरह के तर्क को कॉमन ड्रीम्स ने इस सप्ताह की शुरुआत में अपनी रिपोर्ट में पूरी तरह से खारिज कर दिया है।
इस सप्ताह प्लॉऊशेयर फंड के अध्यक्ष जो सर्कियोन ने लिखा है कि 'यहां जो कोई भी छोटे परमाणु हथियार के प्रयोग का सुझाव दे रहा है, वह परमाणु युद्ध की वास्तविकता से पूरी तरह से अनभिज्ञ है। यहां तक कि सबसे छोटे से छोटा परमाणु विस्फोट भी बड़े से बड़ा पारंपरिक बम की तुलना में कई गुना अधिक शक्तिशाली होगा जिसका दुष्परिणाम कल्पनातीत होगा।'
नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने शनिवार को जारी खुले पत्र में युद्ध को समाप्त करने के अलावा इस बात पर मुखर वादा करने का आह्वान किया है कि यूक्रेन में युद्ध के दौरान परमाणु हथियारों का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। पत्र में दुनिया के सभी देशों का 'परमाणु हथियार निषेध संधि' का समर्थन करने का आह्वान किया गया है, जिसमें यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि हम फिर कभी परमाणु खतरे जैसे क्षण का सामना न करने पाएं।'
पत्र के अंत में कहा गया है, 'या तो परमाणु हथियारों का अंत करें नहीं तो हमारा अंत निश्चित है।'

• केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व में तिब्बतियों ने तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस का ६३वां वर्षगांठ मनाई

tibet.net, १० मार्च२०२२

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व में धर्मशाला में निर्वासित तिब्बतियों ने तिब्बती शहीदों की याद में १० मार्च की सुबह ६३वां तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह दिवस को याद किया, जो पीएलए के अवैध कब्जे के खिलाफ १९५९ में इसी दिन ल्हासा में भड़क उठा था।

चेक सीनेट के उपाध्यक्ष, जिरीओबरफेल्ज़र

स्मरणोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जिरी ओबरफेल्जर और विशेष अतिथि के रूप में भारतीय राज्यसभा के सदस्य अमरेंद्र धारी सिंह ने भाग लिया। इसके अलावा, इस आधिकारिक समारोह में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के लोकतांत्रिक स्तंभों के प्रमुख, सांसद, सचिव, सीटीए के कर्मचारी, निदेशक, विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि और धर्मशाला के निवासी तिब्बती शामिल हुए।

कार्यक्रम की शुरुआत सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग द्वारा तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई। उसी समय जनता ने तिब्बती राष्ट्रगान गाया। इसके बाद तिब्बती शहीदों के बलिदान को याद करते हुए एक मिनट का मौन रखा गया।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि के भाषण से पहले सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग और अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने क्रमशः कार्यापालिका और विधायिका के बयान पढ़े।

विशिष्ट अतिथि अमरेंद्र धारी सिंह ने तिब्बत के संघर्ष के साथ-साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित विषयों की व्याख्या करते हुए सभा को संबोधित किया, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से तिब्बत पर चीन के आक्रमण से जुड़ा है।

उन्होंने तिब्बती पठार के सैन्यीकरण, पर्यावरण पतन, अमानवीय दमन और तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म को नष्ट करने के अभूतपूर्व प्रयासों के लिए चीन को फटकार लगाई।

उन्होंने कहा, 'चीन को यह कहकर बचने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए कि यह उसका आंतरिक मामला है। यह हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है, यह मानवाधिकारों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का मामला है, जो हमारा लोकाचार है। सांसद अमरेंद्र धारी सिंह ने कहा कि चीन को एक सख्त संकेत भेजा जाना चाहिए कि भारत कब्जे वाले तिब्बत में रह रहे और निर्वासित तिब्बतियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। उन्होंने आगे तिब्बतियों को तिब्बती धर्म और संस्कृति का पालन करने के लिए भारत द्वारा समर्थन दिए जाने का आश्वासन दिया।'

परम पावन दलाई लामा को 'शताब्दी की सबसे बड़ी नैतिक शक्ति' के रूप में वर्णित करते हुए विशेष अतिथि ने यह भी कहा कि, 'परम पावन इस समय भारत रत्न के सबसे बड़े हकदार हैं। इस समय इस पुरस्कार के लिए उनके कद का कोई व्यक्ति ओर नहीं है।'

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि जिरी ओबरफेल्जर ने कहा कि, 'चेक गणराज्य में हमने कई दशकों तक अधिनायकवादी कम्युनिस्ट प्रणाली का अनुभव किया है और इसलिए हम इसी तरह के इतिहास का सामना कर रहे और दुर्भाग्य से अब तक इसका सामना कर रहे दूसरों समुदायों की स्थिति को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।' मुख्य अतिथि ने यह भी उल्लेख किया कि उनके देशवासी कितने भाग्यशाली हैं कि उनके पास वक्लेव हॉवेल जैसा नेता हुए, जिन्होंने विवेक और जिम्मेदारी को आर्थिक सफलता से ऊपर रखा। उन्होंने कहा कि, 'यही कारण है कि चेक गणराज्य की आजादी हासिल करने के बाद शुरुआती महीनों में ही राष्ट्रपति के तौर पर वैक्लेव हॉवेल ने परम पावन दलाई लामा को हमारे देश का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया।'

अपने संबोधन को समाप्त करने से पहले जिरी ओबरफल्जर ने कहा, 'मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि यदि दुनिया में कोई भी एक राष्ट्र दमन का शिकार है तो कोई भी देश पूरी तरह से सुरक्षित नहीं हो सकता है। कोई भी अपनी स्वतंत्रता के बारे में सुनिश्चित नहीं हो सकता है और इसलिए उन्होंने तिब्बती की लड़ाई को 'सबसे महत्वपूर्ण मानवीय जरुरत- लोगों की आत्मा और आत्मा की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई' के तौर पर रेखांकित किया।'

शांति मार्च शुरु होने से पहले 'आधिकारिक १० मार्च की सभा' प्रार्थना के साथ संपन्न हुई।

तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस की 63वीं वर्षगांठ पर कशाग का वक्तव्य

तिब्बत पर चीनी कब्जे के खिलाफ तिब्बती लोगों ने 63 साल पहले आज ही के दिन सन 1959 में ल्हासा की सड़कों पर शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन किया था। आज का दिन सन 2008 के मार्च महीने में सम्पूर्ण तिब्बत में तिब्बतियों द्वारा चीनी शासन के खिलाफ अहिंसक आंदोलन की चौदहवीं वर्षगांठ भी हैं। हम तिब्बत के उन वीर भाइयों और बहनों को श्रद्धांजलि अर्पित करते है जिन्होंने तिब्बत के आध्यात्मिक और राजनीतिक मामले की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति दी है। हम तिब्बत में भारी दमन का सामना कर रहे तिब्बती लोगों के प्रति एकजुटता प्रकट करते है।

तिब्बत के लंबे इतिहास में, तिब्बतियों ने तीन महान धार्मिक राजाओं के शासनकाल में अपना प्रभाव और अधिकार प्राप्त किया है। अपने विघटन के बाद भी तिब्बती बौद्ध धर्म ने मंगोलिया की सैन्य शक्ति और चीन की राजनीतिक शक्ति के बावजूद पूर्वी एशिया में समान प्रभाव का आनंद लिया था। तिब्बत ने उन साम्राज्यों के साथ भी पुजारी-संरक्षक का संबंध बना लिया था, जिन्होंने कालक्रम में तिब्बत और चीनी साम्राज्यों पर कब्जा किया था। इनके बीच का यह संबंध अधिकतर समय तक आपसी सम्मान और सद्भाव के आधार रहा है।

जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने 1 अक्टूबर 1949 को सत्ता स्थापित किया था तब उसने तिब्बत की तथाकथित "शांतिपूर्ण मुक्ति" की घोषणा की। इसके तुरन्त बाद सन 1950 में बड़ी संख्या में चीनी कम्युनिस्ट सेनाबल ने तिब्बत के छामदो पर अक्रमाण कर तिब्बती सेना को पराजित किया था। सन 1951 को चीन ने तिब्बतियों को जबरन 17 सूत्रीय संधी पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर कर पहली बार समपूर्ण तिब्बत को अपने कब्जे में ले लिया था। हालांकि, परमपावन दलाई लामा जी और तत्कालीन तिब्बत सरकार ने चीनी सरकार के साथ समझोते के आधार पर सहयोग देने की हरसंभव प्रयास किया था लेकिन चीनी सेना के निरंतर दमन से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का बुनियादी ही कुचाल दिया था। परम पावन दलाई लामा जी के साथ 80 हज़ार तिब्बतियों के पास निर्वासन में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं मिला था।

अगले दो दशकों के लिए तिब्बत ने अपने इतिहास में सबसे बुरे समय का अनुभव किया। 1956 में तिब्बत के खाम और आम्दो प्रांतों में तथाकथित "लोकतंत्रिक सुधार" के शुरु होने के बाद मठों का विध्वंस तथा लामाओं एवं भिक्षुओं को गिरफ्तार किया गया था। उस समय, चीन सरकार को नस्लीय मुद्दों के लिए कोई स्पष्ट नीति नहीं थी। हालांकि यह जल्द ही बदल गया जब माउ चेतुंद ने 1958 के अम्दो प्रांत के यदज़ी काउंटी में तिब्बतियों तथा सालारों द्वारा विद्रोह किए जाने पर संकेत लेते हुए बताया कि राष्ट्रीयता का मुद्दा वास्तव में वर्ग का मुद्दा है। माउ चेतुंद ने विद्रोह को दमन करने, लोकतंत्रितक सुधारों और सांस्कृति क्रांति के नाम पर विध्वंसकारी अभियानों का अनेक कार्यक्रम शुरु किया था। यह वास्तव में तिब्बत में सांस्कृतिक नरसंहार का शुरुआत थी जिसके कारण 12 लाख तिब्बतियों की मृत्यु तथा छह हज़ार मठों का विनाश हुआ था।

1980 के दशक में चीन में सुधार और खुलेपन की नीति देखी और चौथा चीन लोक गणराज्य की संविधान तथा राष्ट्रीय क्षेत्रीय स्वायत्तता कानून की घोषणा की गई। इसके अतिरिक्त, तिब्बत स्वायत्त प्रिफेक्चर तथा काउंटियों में कई कानून बनाकर मठों की पुनर्स्थापना, भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों की धार्मिक अध्ययन की पुनरुद्धार, तिब्बती भाषा को प्रोत्साहित करना तथा तिब्बत कार्यकर्ताओं के पोषण एवं भूमि का स्वामित्व सौंपने जैसी उदार नीतियों के कार्यान्वयन की गारंटी देने की कानूनी समर्थन दिया गया था। इसी तरह भारत से नए तिब्बती तथ्यान्वेषी प्रतिनिधिमंडल और खोजी मिशनों को अनुमति देने और तिब्बतियों को अपने परिवार तथा रिश्तेदारों से मिलने के लिए तिब्बत में जाने की अनुमति प्रदान करने से चीन-तिब्बत संघर्ष के समाधान में एक नए उम्मीद की किरण जागी थी।

हालांकि, चीन के उदारवादी नेताओं जैसे हू याबाँग को पद से हटाने, 10वें पेंचेन लामा की अचानक मृत्यु, तिब्बती लोगों द्वारा ल्हासा के शांतिपूर्ण आंदोलन को दबाने की मार्शल लॉ, तियानमेन चौक पर लोकतांत्रिक आंदोलन के छात्रों पर कुचल देना, तिब्बत और चीन सरकार के बीच संवाद प्रतिक्रिया पर रोक लगने के बाद से तिब्बत में स्थिति बद से बदतर हो गई थी। विशेष रूप से 1990 से चीन सरकार ने तिब्बत पर अपने नियंत्रण को मजबूत करने के लिए कठोर नीतियों का पालन किया था। तिब्बत में बुनियादी ढांचे के विकास के नाम पर चीनी आबादी को तिब्बत में स्थानांतरित करने में तेजी लाई और तिब्बती क्षेत्रों की प्रशासनिक कार्यालयों में चीनी कर्मचारियों की संख्या बढ़ा दिया है। इसी तरह अनिवार्य शिक्षा की आड़ में मठों की परम्परा का विनाश तथा मठों को नियंत्रित करने के लिए लोकतांत्रिक प्रबंधन समिति को मजबूत किया गया।

पश्चिम विकास कार्यक्रम अर्थात वेस्टर्न डेवलपमेंट प्रोग्राम की शुरूअत से तिब्बत पर नियंत्रण करना चीन के लिए आसान हो गया। चीनी प्रवासियों को लाभ पहुंचाने और तिब्बत में खनिज संसाधनों के दोहन के लिए बड़े पैमाने पर विकाय कार्यक्रम चलाए गए। द्विभाषी शिक्षा नीति के नाम पर चीनी भाषा को बढ़ावा देने से तिब्बती भाषा को ओर ज्यादा कमजोर कर दिया। चीन सरकार ने तिब्बती लोगों पर नियंत्रण करने के लिए टुल्कु के पुनर्जन्म का चयन करने की आधिकारों को हड़पने की नए नीति अपनाईगई थी।

इन क्रूर नीतियों के परिणामस्वरुप 2008 में तिब्बत के तीनों प्रातों से तिब्बतियों ने चीनी शासन के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन किए गए। चीन सरकार ने प्रदर्शनकारियों को क्रूरता से दमन किया जिसके कारण सैकड़ों तिब्बतियों की मौत तथा हजारों तिब्बतियों को गिरफ्तार किया था। इसके परिणामस्वरुप तिब्बत में बड़े पैमाने पर सशस्त्र बलों की तैनाती और पूरे तिब्बत में तिब्बतियों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगाया था। चीनी भाषा के माध्यम से शिक्षा बनाने की नीति तेजी से लागू किया और मठों में "देशभक्ति शिक्षा" अभियान को मजबूत किया। इसके चलते चीनी शासन के विरोध में 2009 से अब तक पूरे तिब्बत में 156 तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा की तिब्बत में वापसी तथा तिब्बत की आज़ादी के लिए आत्मा-बलिदान दिया था। चीन-तिब्बत वार्ता की प्रक्रिया भी 2010 से समाप्त हो गया था। आज हमारे लिए सबसे चिंता का विषय तिब्बत में तिब्बतियों की नए पीढ़ीयों को व्यवस्थित रुप चीनीयों में बदलना है। 2011 में चीनी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ नीति सलाहकारों ने राष्ट्रीय-क्षेत्रीय स्वायत्तता प्रणाली को निरस्त करने और 56 राष्ट्रीयताओं की पहचान को कमजोर करने एवं एक चीनी राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने के लिए तथाकथित 'दूसरी पीढ़ी की जातीय नीतियां" को लागू करने का आह्वान किया था। उन्होंने नस्लीय अल्पसंख्यकों के लिए अधिमान्य नीतियों को रद्द करने, नस्लीय अस्मिता को प्रोत्साहित करने, चीनी भाषा उपयोग करने और राष्ट्रीयताओं के लिए स्कूलों को बंद करने का आह्वान किया। इन सभी उपायों का आज वास्तव में तिब्बत में लागू किए जा रहे हैं।

2012 में चीन सरकार को गांवों में प्राथमिक स्कूलों को बोर्डिंग स्कूलों में विलय करने की नीति को बदलना पड़ा था क्योंकि चीन में इस पर कड़ा विरोध हुआ था। हालांकि 2015 में चीनी राज्य परिषद ने एक निर्देश जारी कर अलग नस्लीय क्षेत्रों के बच्चों को बोर्डिंग स्कूल व्यवस्था में पढ़ना, रहना और बढ़ना अनिवार्य कर दिया था। ऐसा अनुमान है कि 2019 तक तिब्बत के कुल छात्रों में से 78 प्रतिशत बच्चों को बोर्डिंग स्कूलों में रहने के लिए मजबूर किया गया है।

इसी तरह अगस्त 2021 में चीन के शिक्षा मंत्रालय ने 14वें पंचवर्षीय योजना के दौरान जातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल-पूर्व बच्चों को समान भाषा में शिक्षा के लिए बच्चों की समरुपता योजना (चिल्ड्रन होमोफोली प्लान फॉर कॉमन लैंग्वेज फॉर प्रीस्कूल चिल्ड्रन) को लागू करने का एक आदेश जारी किया। इससे स्कूल-पूर्व बच्चों को आवश्यक शिक्षा के लिए तथाकथित अच्छी नींव रखने के लिए चीनी भाषा अर्थात मंदारिन बोलने और लिखने के लिए अनिवार्य किया है। इसी तरह तिब्बती क्षेत्रों में सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती परीक्षा की माध्यम तिब्बती भाषा से चीनी भाषा में बदल दिया है।

तिब्बती बच्चों को तिब्बती भाषा सीखने की अधिकार से वंचित करने वाले ऐसी नीति का गंभीर परिणाम अगले दो दशकों में जरुर दिखेंगा। तिब्बती भाषा तिब्बती लोगों की पहचान, संस्कृति और धर्म का मुख्य हिस्सा है।

अपनी भाषा सीखने और उपयोग करने के अधिकार का व्यवस्थित रुप से समाप्त करना चीनी संविधान और राष्ट्रीय-क्षेत्रीय स्वायत्त पर कानून में निहित अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के अधिकारों का घोर उल्लंघन है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कैसे चीन सरकार भाषाओं के संरक्षण पर विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घोषणाओं का उल्लंघन कर रहा है जिसमें सितंबर 2018 में चीन के छंगश में आयोजित "विश्व भाषा संसाधन संरक्षण सम्मेलन" की घोषणा, संयुक्त राष्ट्र के स्थानीय लोगों के अधिकारों पर घोषणा तथा नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय नियम शामिल हैं। ये वे संधियां और कानून हैं, जिस पर चीन ने हस्ताक्षर किए हैं।

हम पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के संविधान का सम्मान करते हैं क्योंकि यह राष्ट्रीयताओं की समानता को कायम रखता है और अल्पसंख्यकों के मौलिक अधिकारों का आश्वासन देता है। हालांकि, चीनी भाषा को बढ़ावा देने के लिए दिसंबर 2021 में नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की चीन की स्थायी समिति ने अपनी भाषा सिखाने के लिए राष्ट्रीयताओं के अधिकारों से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को रद्द कर दिया। यह चीनी संविधान के सिद्धांतों की दुरुपयोग तथा गलत व्याख्या करना है।

हम चीनी लोगों और उनकी संस्कृति का सम्मान करते हैं। लेकिन हम खुद को एक चीनी नागरिक के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते हैं, क्योंकि तिब्बती लोगों की एक अलग नस्ल है जोकि छह मूल पैतृक जनजातियों से निकली है और संस्कृति के तौर पर बॉन परंपरा एवं बौद्ध धर्म से प्रभावित है।

यदि चीन सरकार तिब्बती लोगों के प्रेम और निष्ठा पाना चाहते है तो उसे अपने स्वयं के संविधान का सम्मान करते हुए तिब्बतियों की मानवाधिकारों का अत्याचार और तिब्बती पहचान का विनाश बंद करना चाहिए। चीन को तिब्बतियों और चीनियों के इस ऐतिहासिक तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि वे एक पड़ोसी के रुप में सद्भाव और पारस्परिक सहयोग के साथ रहते थे। चीन सरकार को उन विचारों और कार्यों को समाप्त करना चाहिए जो तिब्बतियों और चीनियों के बीच शत्रुता को जन्म देते हैं, इसके बजाय तिब्बतियों की आकांक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए।

पिछले 63 वर्षों से तिब्बती लोगों द्वारा अपनी वास्तविक आकांक्षाओं को स्पष्ट किए जाने के बावजूद चीन सरकार इसकी विपरीत नीतियों को आगे बढ़ा रही है। आज, बुनियादी ढांचे के निर्माण और प्राकृतिक भंडार के निर्माण के नाम पर तिब्बती खानाबदोशों और किसानों को स्थानांतरित होने के लिए विस्थापित होने पर मजबूर किया जाता है। उनके रहने वाले पारंपरिक वातावरण को जबरन बदल दिया गया है। गरीबी को कम करने और 'ग्रामीण अधिशेष मजदूरों' के प्रशिक्षण और स्थानांतरण की आड़ में विस्थापन को भी आगे बढ़ाया गया है। तिब्बती विद्यर्थियों को चीन में काम करने के लिए उसके 'आत्मसातिकरण अभियान' के हिस्से के रुप में भेजा जा रहा है। इसी तरह, 'नस्लीय एकता के लिए आदर्श' के नारे के तहत तिब्बतियों और चीनियों के बीच विवाह संबंध को प्रोत्साहित किया जाता है।

नास्तिक चीन सरकार तिब्बती बौद्ध धर्म की पुनर्जन्म परम्परा, मठों को नियंत्रण तथा भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के अकादमिक शिक्षण एवं मुक्त आवाजाही के प्रतिबंधों में हस्तक्षेप करना जारी रखे हुए है। 'तिब्बती बौद्ध धर्म को समाजवादी समाज के अनुकूल बनाने और चीनी संदर्भ में विकसित करने' के बैनर तले चीन सरकार ने ऑनलाइन धार्मिक सामग्री के प्रसार पर प्रतिबंध लगा दिया है और खाम ड्रागो में बौद्ध मूर्तियों को विध्वंस किया गया है। साथ ही तिब्बती परंपरिक प्रांत खाम के खरमार मठ को जबरन बंद कर दिया था। इसी तरह तिब्बती बुद्धिजीवियों जैसे गो शेरब ग्यात्सो, लेखकों, शिक्षकों, छात्रों, मानवाधिकारों एवं पर्यावरण कार्यकर्ताओं को मनमाने ढंग से गिरफ्तारी तथा कारावास निरंतर जारी है। चीन में तिब्बती बौद्ध मठों और स्तूपों को नष्ट करने, पारंपरिक वास्तुकला, तिब्बती लेखन और भित्ति चित्र को नष्ट करने की भी खबरें हैं।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन माध्यम-मार्ग नीति के तहत वार्ता के माध्यम से तिब्बत की भविष्य की स्थिति के लिए एक पारस्परिक रुप से सहमत समाधान खोजने की उम्मीद करता है विशेषकर चीन सरकार से अपनी गलत नीतियों को ठीक करने का आग्रह करते है। हम समानता, मित्रता और पारस्परिक लाभ के आधार पर स्थायी समाधान तलाशने के लिए चर्चा में शामिल होने के लिए तैयार हैं।

जब तक चीन-तिब्बत संघर्ष का समाधान नहीं हो जाता है, हम तिब्बत में अपने भाइयों एवं बहनों के स्वतंत्र प्रवक्ता के रुप में चीन सरकार द्वारा तिब्बत में चलाए जा रहे दमन और तिब्बती पहचान को खत्म करने की इरादे के बारे में विश्व की संसदों, सरकारों, विशेषज्ञों तथा पत्रकारों के ध्यान में स्वैच्छिक तिब्बती वकालत अभियान तथा अन्य माध्यमों के द्वारा उपयोग करने की हरसंभव प्रयास करेंगे।

चीन के दमन के बावजूद तिब्बत के भीतर तिब्बती लोगों ने अपने धर्म, संस्कृति, भाषा तथा प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षण करने के अपने दृढ़ संकल्प और साहस में अडिग है। उनकी साहस हमारे संकल्प के लिए प्रेरणा है। तिब्बत में हमारे तिब्बती भाइयों एवं बहनों द्वारा ली जा रही जिम्मेदारी एक जन्मसिद्ध मानव अधिकार है और चीनी संविधान के अनुरुप भी है। इसलिए हमें अटूट संकल्प के साथ अपनी पहचान को सुरक्षित रखने की अधिकार के लिए संघर्ष जारी रखना सबसे महत्वपूर्ण है। तिब्बत में चीन सरकार की नीतियों को ध्यान में रखते हुए निर्वासन में तिब्बतियों को अपनी संस्कृति और पहचान को बनाए रखने के लिए अपने प्रयासों को दोगुना करना चाहिए।

परम पावन 14वें दलाई लामा के मार्गदर्शन और नेतृत्व में निर्वासन में तिब्बतियों ने एक प्रभावशाली प्रशासन के निर्माण में उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त की हैं। हमें इसे बनाए रखने की प्रयासों को बरकरार रखना चाहिए।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए हम पिछले 60 वर्षों से तिब्बत मुद्दे के लिए निरंतर

समर्थन देने वाले विभिन्न राष्ट्रों विशेष रुप से भारत के केंद्र और राज्य सरकारों तथा तिब्बत समर्थक समूहों के प्रति आभार प्रकट करना चाहते हैं। हम अमेरिका सरकार द्वारा तिब्बती मुद्दों के लिए विशेष समन्वयक नियुक्त करने के लिए आभार प्रकट करते हैं। हम समान विचारधारा वाले राष्ट्रों से तिब्बत मुद्दे की समाधान हेतु माध्यम-मार्ग दृष्टिकोण को समर्थन देते हुए तिब्बत की वास्तविक ऐतिहासिक स्थिति को मान्यता देने की आग्रह करते हैं।

चूंकि मई महीने में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बैचेलेट शिंझियांग की यात्रा करने वाली हैं, हम उच्चायुक्त से तिब्बत का भी दौरा करने की आग्रह करते हैं।

हम 26 वर्षीय प्रसिद्ध तिब्बती गायक छेवांग नोरबू के लिए प्रार्थना प्रकट करते हैं जिन्होंने कुछ मीडिया सूत्रों के अनुसार 25 फरवरी को ल्हासा में आत्मदाह कर तिब्बत के लिए बलिदान दी थी। हालांकि, चीनी सरकार द्वारा लगाए गए भारी प्रतिबंधों और निगरानी के कारण, हमें उनकी स्थिति के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। हमारे संघर्ष के इस महत्वपूर्ण समय में एक देशभक्त तिब्बती की प्राण भी हमारे लिए एक अपूरणीय क्षति है। चूंकि प्रत्येक तिब्बती का जीवन अनमोल है, हमें जीवित रहना चाहिए और अपने आध्यात्मिक और राजनीतिक कार्यों में योगदान देना चाहिए।

हम इस दिन को यूक्रेन पर आक्रमण से उत्पन्न युद्ध की छाया के रुप में भी चिह्नित करते हैं। हम इस संघर्ष में अपनी जान गवाने वालों और घायलों के लिए प्रार्थना करते हैं और 20 लाख से अधिक यूक्रेनियाई शरणार्थियों के प्रति एकजुटता प्रकट करते हैं। हम वैश्विक महामारी और अन्य मानव निर्मित संघर्षों के तत्काल अंत के लिए भी प्रार्थना करते हैं। और मानवता शांति एवं खुशी के साथ से रह सके।

अंत में, मैं परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु और उनकी इच्छाओं की सहज पूर्ति के लिए प्रार्थना करता हूं। तिब्बत मुद्दे के सत्य की विजय हो।

कशाग

१० मार्च२०२२

नोटः यह तिब्बती भाषा में जारी वक्तव्य का अंग्रेजी अनुवाद है। यदि इसमें और तिब्बती मूल पत्र के बीच कोई अंतर है तो कृपया तिब्बती बयान को आधिकारिक और अंतिम मानें।

• केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा १९८९ के शांतिपूर्ण आंदोलन की याद में प्रार्थना सभा का आयोजन

tibet.net, ०८ मार्च२०२२

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के अधिकारि योंप्रार्थना में भाग लेते हुए

धर्मशाला। सीटीए के धर्म एवं संस्कृति विभाग ने चीनी सरकार के खिलाफ १९८९ के शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शनों में भाग लेने वाले तिब्बती प्रदर्शनकारियों द्वारा किए गए बलिदान की याद में प्रार्थना सभा का आयोजन किया था।

१९८९ के प्रदर्शन की स्मृति में प्रार्थना सेवा में कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त कर्मा दमदुल, स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग, डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग, न्यायिक आयुक्त तेनज़िन लुंगटोक, कालोन थरलाम डोल्मा, कालोन नोरज़िन डोल्मा, संसदीय स्थायी समिति के सदस्य, विभिन्न विभागों के सचिवों और नामग्याल मठ के भिक्षुओं के साथ- साथ सीटीए के कर्मचारियों ने भाग लिया।

०८ मार्च की प्रार्थना सेवा की शुरुआत १९८९ में उस समय हुई, जब तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस की ३०वीं वर्षगांठ मनाने के लिए भिक्षुओं, भिक्षुणियों और आम लोगों की समूह सड़कों पर उतर आया था। इसके बाद चीनी अधिकारियों द्वारा ०८ मार्च को मार्शल लॉ लागू करने के बाद सैकड़ों शांतिपूर्ण तिब्बती प्रदर्शनकारियों को मार दिया गया था। तब से केंद्रीय तिब्बती प्रशासन इस आयोजन को मनाने के लिए प्रतिवर्ष एक प्रार्थना सभा का आयोजन कर रहा है। हालांकि, सीटीए ने इस बार रुस द्वारा जारी आक्रमण के बीच यूक्रेन के अंदर शांति और स्थिरता के लिए भी प्रार्थना की।

सिक्योंग ने अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के निधन पर शोक व्यक्त किया

tibet.net, २५ मार्च२०२२

अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के निधन पर सिक्योंग का शोक संदेश

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने आज अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन अलब्राइट के निधन पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया। मेडलीन का बुधवार को ८४ वर्ष की आयु में निधन हो गया था। सिक्योंग ने मेडलीन के पुत्र को भेजे अपने शोक पत्र में लिखा, 'बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि मुझे आपकी प्यारी मां और अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री मेडलीन के. अलब्राइट के निधन के बारे में पता चला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों की ओर से मैं आपको, आपके परिवार और अमेरिका के लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।' पत्र में लिखा है कि 'तिब्बती लोगों द्वारा उनके निधन से हुए नुकसान की अपार भावना गहराई से महसूस की जाती है। उन्होंने तिब्बती मुद्दों के बारे में वैसा ही अभियान चलाया, जैसा अभियान उन्होंने मानवाधिकारों और दुनिया भर में लाखों लोगों की स्वतंत्रता के लिए चलाया था। वह तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक नियुक्त होनेवाली पहली अमेरिकी विदेश मंत्री थीं। यह एक महत्वपूर्ण पद है जो चीन-तिब्बत संघर्ष को सुलझाने में अमेरिकी प्रयासों और सहायता की देखरेख करती है। हम उनके नेतृत्व और समर्थन के लिए हमेशा आभारी रहेंगे।' शोक पत्र का समापन करते हुए लिखा कि, 'इसके अलावा लोकतंत्र और शांतिपूर्ण दुनिया के लिए पूर्व विदेश मंत्री के सपने को साकार करने की उम्मीद की जाती है, जो उनकी आजीवन सेवा रही है।'

• चीनी पुलिस ने लोकप्रिय तिब्बती लामा के अंतिम संस्कार पर प्रतिबंध लगाया छोकत्रुल दावा रिन्पोछे को चीनी शासन का विरोध करने के लिए वर्षों तक जेल में रखा गया था।

rfa.org, २५ मार्च२०२२

छोकत्रुल दावा रिन्पोछे

रेडियो फ्री एशिया के अनुसार इस साल की शुरुआत में चीनी पुलिस ने उन लोकप्रिय तिब्बती लामा के अंतिम संस्कार को प्रतिबंधित कर दिया था, जिन्होंने भक्तों को ऑनलाइन पोस्ट किए गए धार्मिक नेता की तस्वीरों को हटाने से रोक दिया था।

तिब्बत से मिली एक स्त्रोत ने बताया कि ८६ वर्षीय छोकत्रुल दावा रिनपोछे की ३० जनवरी को तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अपने निवास पर मृत्यु हो गई और उसके तुरंत बाद वह ठुकदम में प्रवेश कर गए। इसे यह माना जाता है कि एक मृत शरीर ध्यान चेतना में कुछ समय के लिए शरीर में बनी रहती है।

आरएफए के सूत्र ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'लेकिन चीनी सरकार ने रिनपोछे के निधन को यथासंभव गुप्त रखने की कोशिश की और लोगों को उनकी निधन की खबर ऑनलाइन साझा न करने की चेतावनी दी।'

उन्होंने कहा, 'इसके अलावा पहले से ही ऑनलाइन में जारी रिनपोछे की तस्वीरें और वीडियो चीनी सरकार द्वारा जल्दी से हटा दिए गए थे।'

तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में नाग्चु (चीनीः नैकू) काउंटी में गदेन दरग्यलिंग मठ के वरिष्ठ शिक्षक छोकत्रुल दावा रिनपोछे को भारत में निर्वासन में रह रहे तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के साथ अपने मठ में मामलों पर चर्चा करने के लिए २०१० में सात साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।

सूत्र ने कहा, 'और उनकी रिहाई के बाद उन्हें जीवन भर के लिए चीनी अधिकारियों द्वारा लगातार निगरानी के दायरे में रखा गया।'

स्त्रोत के अनुसार, जब १३ जनवरी को रिनपोछे का ठुकदम समाप्त हुआ तो चीनी सुरक्षा अधिकारियों को उनके आवास की रक्षा के लिए भेजा गया और भक्तों को उनके सम्मान में प्रार्थना सभा आयोजन करने से रोक दिया, केवल ल्हासा के निवासियों को घर में प्रवेश करने की अनुमति दी गई।

फिर रिनपोछे के छात्रों की कई अपीलों के बाद, चीनी सरकार ने उनके शरीर को ल्हासा से १८ जनवरी को नागचू में गदेन दरग्यलिंग मठ ले जाने की अनुमति दी। हालांकि, केवल दो वाहनों को उन्हें वहां ले जाने की अनुमति दी गई थी।

सूत्र ने कहा, बाद में केवल कुछ तिब्बतियों को उनके अंतिम संस्कार में भाग लेने की अनुमति दी गई, जिसके कारण तिब्बती भक्तों और चीनी पुलिस के बीच झड़प भी हो गई।

उन्होंने कहा कि केवल रिनपोछे के अपने मठ के भिक्षुओं को ही २५ जनवरी को उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने की अनुमति दी गई थी और समारोह से पहले सेल फोन की तलाशी ली गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई तस्वीर नहीं ली गई हैं।

१९३७ में नागचू में जन्मे छोकत्रुल दावा रिनपोछे को १९६० में तिब्बत पर चीन के कब्जे का विरोध करने के लिए पांच साल की सजा सुनाई गई थी। यह सजा पूरी हुई नहीं कि चीन की सांस्कृतिक क्रांति (१९६६-१९७६) के दौरान फिर से सात साल के लिए जेल में बंद कर दिया गया था।

तिब्बत पर ७० साल पहले जबरन आक्रमण किया गया था और इस स्वतंत्र देश को चीन में शामिल किया गया था। इसके बाद से तिब्बत में रहने वाले तिब्बती अक्सर चीनी अधिकारियों द्वारा भेदभाव और मानवाधिकारों के हनन की शिकायत करते रहे हैं। चीनी सरकार की नीतियों का उद्देश्य तिब्बत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान को मिटाना है।

• प्रख्यात लेखक एवं पर्यावरणविद् कुंचोक त्सेफेल १३ साल जेल में रहने के बाद रिहा हुई।

phayul.com,चोकेल्हामो

धर्मशाला। प्रसिद्ध तिब्बती लेखक, शिक्षक और पर्यावरणविद् कुंचोक त्सेफेल गोपे त्सांग को कथित तौर पर १३ साल जेल की सजा काटने के बाद १८ मार्च को रिहा कर दिया गया है। उन्हें २००९ में 'सरकार के गोपनीय सूचनाओं को लीक करने' के आरोप में १५ साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। धर्मशाला स्थित अधिकार समूह 'तिब्बतन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी (टीसीएचआरडी)' को पता चला है कि एक साथी कैदी के जीवन को बचाने और जेल में 'अच्छे व्यवहार' के लिए त्सेफेल की सजा की अवधि लगभग दो साल कम कर दी गई थी।

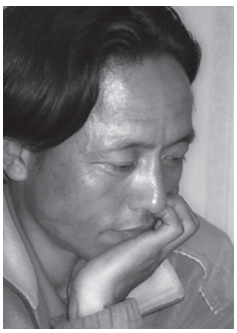

प्रख्यात लेखक एवं पर्यावरणविद् कुंचोक त्सेफेल

सोमवार को प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया, 'टीसीएचआरडी समझता है कि त्सेफेल और उसके परिवार के सदस्य इस तथ्य को देखते हुए कड़ी निगरानी में हैं कि त्सेफेल को अभी भी 'राजनीतिक अधिकारों से वंचित' रहने की चार साल की पूरक सजा काटनी है। यह पुलिस के विवेक पर निर्भर करता है कि वह त्सेफेल की गतिविधियों और आवागमन पर अत्यधिक प्रतिबंध लगाए या नहीं।'

त्सेफेल पर्यावरण अधिकारी थे और पहली तिब्बती साहित्यिक वेबसाइट छोमेह (बटर लैंप) के सह-संस्थापक थे। इन्होंने प्रसिद्ध तिब्बती कवि क्याबचेन डेड्रोल के साथ 'तिब्बती कवियों की तीसरी पीढ़ी' के रूप में जाने जाने वाले साहित्यिक आंदोलन का नेतृत्व किया। यह स्वतंत्र और व्यक्तिवादी विचारधारा को बढ़ावा देता है।

चीनी अधिकारियों द्वारा २००५ में स्थापित उनकी वेबसाइट को विभिन्न अवसरों पर बंद या सेंसर किया गया था। उन्हें पहली बार २६ फरवरी २००९ को उनके घर पर छापेमारी के बाद हिरासत में लिया गया था और कंप्यूटर, कैमरा और सेल फोन सहित उनके सभी उपकरणों को जब्त कर लिया गया था। महीनों की मनमानी हिरासत के बाद आखिरकार १२ नवंबर को कन्ल्हो इंटरमीडिएट पीपुल्स कोर्ट द्वारा बंद कमरे में

मुकदमे में अस्पष्ट आरोपों के लिए उन्हें दोषी ठहराया गया। हालांकि, कई रिपोर्ट में कहा गया है कि उनपर लगे आरोप उनकी वेबसाइट की सामग्री और २००८ के विद्रोह के दौरान तिब्बत के बाहर जानकारी भेजने से संबंधित थे।

अपनी उम्र के ५० के दशक में चल रहे त्सेफेल कनल्हो तिब्बती स्वायत्त प्रान्त के माचू काउंटी में नगुलरा टाउनशिप के निवासी हैं। १९८९ में वह निर्वासन में भारत आए और हिमाचल प्रदेश स्थित तिब्बती सुजा स्कूल में दाखिला लिया था, जहां उन्होंने तीन साल तक तिब्बती और अंग्रेजी की पढ़ाई की। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद १९९४ में वह तिब्बत लौट आए और फिर बीजिंग मिंज़ू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी और चीनी भाषा का अध्ययन किया। इसके बाद १९९७ से १९९९ तक उन्होंने लान्झोउ के नॉर्थ-वेस्ट नेशनलिटी यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी का अध्ययन किया। एक शिक्षक के रूप में उनका कैरियर माचू काउंटी के तिब्बती मिडिल स्कूल से शुरू हुआ, जहां उन्हें २००४ में अनुकरणीय सेवा के लिए 'सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार' भी मिला।

• तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अभूतपूर्व कडे दमन के बीच आत्मदाह करनेवाले छेवांग नोरबू का निधन

tibet.net, १२ मार्च२०२२

छेवांग नोरबू

एक विश्वसनीय स्रोत ने इस बात की पुष्टि की है कि फरवरी के अंत में कथित तौर पर आत्मदाह करने वाले २५ वर्षीय समकालीन तिब्बती गायक छेवांग नोरबू का निधन हो गया है। निर्वासन में तिब्बती मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, छेवांग नोरबू ने २५ फरवरी २०२२ को तिब्बत की राजधानी ल्हासा में पोटाला पैलेस के सामने आत्मदाह कर लिया था। ल्हासा दुनिया के सबसे सख्त निगरानी वाले शहरों में से एक है, जहां भारी पुलिस बल उपस्थिति है। चीनी पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और उसे अपने साथ ले गई। तिब्बत में सूचना के प्रवाह पर अत्यधिक कठोर निगरानी के कारण उनके आत्मदाह के कारणों का पता लगाना मुश्किल हो गया है। कथित आत्मदाह के विरोध के बाद उनकी मृत्यु का कारण भी फिलहाल अज्ञात है।

छेवांग नोरबू के परिवार को ०२ मार्च २०२२ को चीनी पुलिस द्वारा उनके निधन की सूचना दी गई थी। हालांकि, अधिकारियों ने उनका पार्थिव शरीर उनके परिवार को वापस नहीं किया है।

आत्मदाह के विरोध सहित तिब्बत में चीनी सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शनों के बाद चीनी सरकार ने संचार के सभी माध्यमों पर लगभग पूर्ण सेंसरशिप लगाते हुए तत्काल प्रतिबंध और दमन शुरू कर दिया। इस प्रकार के ऐसे विरोधों के बारे में विवरण कई बार वर्षों तक अज्ञात रहता है।

२०१५ में नागचू के ड्रिरु काउंटी में आत्मदाह के बाद मृत्यु हुई २६ वर्षीय तिब्बती शुरमो के बारे में खबर, घटना के पांच साल बाद पिछले साल ही सामने आई थी।

छेवांग नोरबू एक उभरते हुए सितारे थे, जिनकी गीतों ने देश और विदेश में तिब्बती समुदाय के बीच लोकप्रियता हासिल की थी। प्रतिभाशाली बहु-शैली के इस कलाकार की प्रतिभा 'द वॉयस' और 'आइडल्स' जैसी चीनी रियलिटी गायन प्रतियोगिताओं में उभर कर सामने आई थी। उनकी कुछ हिट गानों में 'ड्रेस अप', 'त्सम्पा' और 'एक्सेप्ट यू' शामिल हैं। वह लोकप्रिय और पुरस्कार विजेता महिला गायिका सोनम वांगमो के पुत्र थे, जिन्हें बाद में चीनी सरकार के 'सॉन्ग एंड डांस ट्रूप' में भर्ती कर लिया था।

तिब्बत के चीनी शासन और तिब्बतियों के खिलाफ उसकी कट्टर नीतियों के खिलाफ अंतिम ज्ञात आत्मदाह २६ नवंबर २०१९ को नाबा में योनतेन का था।

०२ मार्च २०२२ को चीनी अधिकारियों ने गायक छेवांग नोरबू के परिवार से संपर्क कर यह सूचित किया कि छेवांग नोरबू का निधन हो गया है। हालांकि, उनका शव उनके परिवार को नहीं सौंपा गया।

• चीनी भाषा में पढाई जाने वाली कक्षाओं के साथ तिब्बती स्कूल वर्ष शुरू

हुई आलोचकों का कहना है कि इस नीति से तिब्बती छात्रों का अपनी राष्ट्रीय भाषा और संस्कृति से जुड़ाव कमजोर होगा।

rfa.org, ०९ मार्च२०२२

सर्दियों की छुट्टी के बाद जब तिब्बती बच्चे अपने स्कूलों में लौटे तो उन्हें कक्षाओं में केवल चीनी भाषा में पढ़ाई करनी पड़ रही है, क्योंकि अधिकारी इस तरह की नीतियों को आगे बढ़ा रहे हैं। इसके बारे में आलोचकों का कहना है कि चीनी सरकार लक्ष्य छात्रों को अपनी मूल भाषा और संस्कृति से संबंध काट देना है।

क्षेत्र में रहने वाले एक तिब्बती सूत्र ने इस सप्ताह आरएफए को बताया कि शिक्षकों को कार्यशालाएं आयोजित करके सिखाया जा रहा है कि चीनी भाषा में बच्चों को पढ़ाना कैसे शुरू किया जाए।

सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर आरएफए के सूत्र ने कहा, 'इन परिवर्तनों के पीछे का इरादा छात्रों का ब्रेनवाश करना है।'

उदाहरण के तौर पर, तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अब स्कूलों में सभी विषय चीनी भाषा में पढ़ाए जा रहे हैं। मैंने एक बार इनमें से कुछ विद्यालयों के विद्यार्थियों से पूछा कि वे इस बारे में क्या सोचते हैं तो उनमें से अधिकांश ने उत्तर दिया कि वे तिब्बती भाषा में पढ़ाए जाने को प्राथमिकता देते हैं।

स्रोत ने कहा कि पाठ्य-पुस्तकों का अब उत्तर-पश्चिमी चीन के किंघई प्रांत के गोलोग (चीनीः गुओलुओ) तिब्बती स्वायत्त प्रान्त में चीनी में अनुवाद किया गया है। इस तरह अब तिब्बती भाषा को छोड़कर, गणित, विज्ञान और ललित कला जैसे अन्य सभी विषयों को चीनी भाषा में पढ़ाया जा रहा है।

तिब्बत के एक अन्य स्रोत ने आरएफए को लिखित संदेश में बताया कि इनमें से कुछ ग्रंथों का अनुवाद पिछले शैक्षणिक सत्र की शुरुआत तक किया जा चुका था। लेकिन अब सभी तिब्बती स्कूलों में चीनी शिक्षण पर जोर दिया जा रहा है। इस तरह चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की राजनीतिक विचारधारा अब शिक्षा का प्रमुख आधार है।

स्रोत ने कहा कि चीनी अधिकारी इन परिवर्तनों की सार्वजनिक चर्चा को दबा रहे हैं ताकि माता-पिता और अन्य संबंधित लोगों द्वारा विरोध-प्रदर्शन को रोका जा सके, जो कि युवा तिब्बतियों के राष्ट्रीय संस्कृति और पहचान के संबंध में उनके ज्ञान पर प्रभाव डालते हैं।

सूत्रों का कहना है कि किंघई में मठों को पहले से ही स्कूल से छुट्टियों के दौरान युवा तिब्बतियों को तिब्बती भाषा पढ़ाने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। प्रांत और पड़ोसी प्रांत सिचुआन में अधिकारियों ने तिब्बती में शिक्षा देने वाले निजी स्कूलों को भी बंद कर दिया है, जिससे छात्रों को सरकारी स्कूलों में जाने को मजबूर किया जा रहा है जहां विशेष रूप से चीनी भाषा में पढ़ाया जाता है।

लंदन स्थित 'तिब्बत वॉच' के शोधकर्ता पेमा ग्याल ने कहा, 'ये बदलाव और नई नीतियां तिब्बती स्कूलों में बहुत पहले शुरू हो गई थीं, लेकिन चीनी सरकार अब उनके बारे में बेहद गोपनीय ढंग से काम कर रही है।'

उन्होंने कहा, 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने तिब्बत में विभिन्न राजनीतिक

तिब्बती विद्यार्थी किंघई के एक स्कूल में चीनी भाषा की कक्षा में भाग लेते हुए

पुनर्शिक्षा अभियान और अन्य शिक्षा अभियान शुरू किए हैं, लेकिन इनमें से किसी अभियान से अब तक वह लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सका जो उनका इरादा था। इसलिए अब वे बहुत कम उम्र से तिब्बतियों का ब्रेनवॉश करने की कोशिश करने जा रहे हैं।'

चीनी में शिक्षण के साथ चीनी भाषा का स्थानीय भाषा की शिक्षा की जगह लेने के सरकारी प्रयासों ने न केवल तिब्बतियों के बीच, बल्कि शिंझियांग के तुर्की भाषा-भाषी उग्यूर समुदाय और उत्तरी चीन के आंतरिक मंगोलिया में भी गुस्सा पैदा किया है।

नस्लीय मंगोलियाई स्कूलों में मंगोलियाई भाषा के प्रयोग को समाप्त करने की योजना ने नस्लीय मंगोलियाई लोगों द्वारा 'सांस्कृतिक संहार' के रूप में वर्णित इस प्रक्रिया के खिलाफ २०२० की महामारी के दौरान हफ्तों तक छात्रों द्वारा कक्षा बहिष्कार, लोगों द्वारा सड़कों पर विरोध और दंगा दस्तों एवं राज्य सुरक्षा पुलिस द्वारा पूरे क्षेत्र में दमनात्मक कार्रवाई की गई।

पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र तिब्बत पर ७० साल पहले आक्रमण किया गया था और चीनी सेना द्वारा इसे चीन में शामिल कर लिया गया था।

सूत्रों का कहना है कि हाल के वर्षों में राष्ट्रीय पहचान का दावा करने के तिब्बती प्रयासों के लिए भाषा अधिकार एक विशेष फोकस बन गए हैं। मठों और कस्बों में अनौपचारिक रूप से संगठित भाषा पाठ्यक्रम चल रहे हैं। इन्हें न केवल 'अवैध सभा' घोषित किया गया है बल्कि शिक्षकों पर हमेशा हिरासत और गिरफ्तारी की तलवार लटकी रहती है।

• चीन लर्निंग ऐप्स में तिब्बती भाषा के उपयोग और स्ट्रीमिंग सेवाओं पर प्रतिबंध लगाया

सूत्रों का कहना है कि इस कदम का उद्देश्य तिब्बतियों को चीन की प्रमुख हान-चीनी संस्कृति में पूरी तरह से आत्मसात करना है।

rfa.org, २३ मार्च२०२२

तिब्बती भाषा के उपयोग पर चीनी सरकार के प्रतिबंध का मुद्दा अब वीडियो सेवाओं और अन्य ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर फैल गया है। तिब्बती स्रोतों के अनुसार, बीजिंग चीन के नस्लीय अल्पसंख्यकों को प्रमुख हान-चीनी संस्कृति में आत्मसात करने पर जोर दे रहा है।

सूत्रों का कहना है कि चीनी सरकार के हालिया निर्देशों के बाद अब चीन स्थित भाषा सीखने वाले ऐप टॉकमेट और वीडियो स्ट्रीमिंग सेवा बिलिबिली ने अपनी साइटों से तिब्बती और उग्यूर भाषाओं को हटा दिया है।

पिछले साल २० दिसंबर को घोषित सरकारी आदेश के तहत, ०१ मार्च से शुरू होने वाले विदेशी संगठन और व्यक्ति अब चीन या तिब्बत में 'धार्मिक सामग्री' ऑनलाइन नहीं फैला सकते हैं। चीन के अंदर के धार्मिक समूहों ने कहा कि उन्हें ऐसा करने के लिए विशेष लाइसेंस प्राप्त करना होगा।

'इंटरनेट धार्मिक सूचना सेवा की सुरक्षा के लिए प्रशासन के उपाय' धार्मिक मामलों के राज्य ब्यूरो, राज्य इंटरनेट सूचना कार्यालय, उद्योग और सूचना मंत्रालय, सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय और राज्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से जारी किया गया था।

तिब्बत के अंदर के एक सूत्र ने इस सप्ताह आरएफए को बताया कि तिब्बती क्षेत्रों में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की विस्तृत श्रृंखला पर अब प्रतिबंध भी लागू हैं।

सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर आरएफए के सूत्र ने कहा, 'विशेष रूप से प्लेटफॉर्मों जहां उपयोगकर्ता अपने दर्शकों के साथ प्रदर्शन करने और संवाद करने के लिए लाइव होते हैं, वहां अधिक प्रतिबंध लगाए गए हैं।'

सूत्र ने कहा, 'तिब्बती लोगों को संचार करते समय तिब्बती भाषा में बात करने की मनाही है और यदि कोई तिब्बती कलाकार अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तिब्बती संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करता है, तो उनके खाते काट दिए जाते हैं।'

तिब्बत के अंदर के एक सूत्र ने इस सप्ताह आरएफए को बताया कि तिब्बती क्षेत्रों में सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की विस्तृत श्रृंखला पर अब प्रतिबंध भी लागू हैं।

सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर आरएफए के सूत्र ने कहा, 'विशेष रूप से वे प्लेटफॉर्म जहां उपयोगकर्ता अपने दर्शकों के साथ प्रदर्शन करने और संवाद करने के लिए लाइव होते हैं, वहां अधिक प्रतिबंध लगाए गए हैं।'

सूत्र ने कहा, "तिब्बती लोगों को संचार करते समय तिब्बती भाषा में बात करने की मनाही है, और यदि कोई तिब्बती कलाकार अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तिब्बती संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करता है, तो उनके खाते काट दिए जाते हैं।'

उन्होंने कहा, अगर इस तरह के प्रदर्शन लाइव होते हैं तो उन्हें सरकार द्वारा तुरंत बाधित कर दिया जाता है ।

आरएफए से बात करते हुए धर्मशाला स्थित तिब्बत नीति संस्थान के शोधकर्ता फेंतोक ने यह पुष्टि की कि चीन के नए प्रतिबंध १ मार्च से लागू हो गए है

फेंतोक ने कहा, 'मूल रूप से, इनका उद्देश्य तिब्बतियों पर उनके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा करने के संबंध में कड़े प्रतिबंध लगाना है।'

सूत्रों ने पहले की रिपोर्ट में आरएफए को बताया कि उत्तर पश्चिमी चीन के किंघई प्रांत में अधिकारियों ने पहले ही धर्म से बंधे तिब्बती सोशल मीडिया समूहों पर प्रतिबंध लगा दिया था। समूह के सदस्यों को चेतावनी दी है कि अगर वे उनका उपयोग करना जारी रखते हैं तो उनकी जांच की जाएगी और जेल में डाल दिया जाएगा।

सूत्रों का कहना है कि परीक्षण और रोजगार के लिए विचार में मंदारिन चीनी में प्रवीणता की आवश्यकता ने तिब्बती छात्रों को वंचित किया है, क्योंकि चीन तिब्बती क्षेत्रों में चीनी संस्कृति और भाषा के प्रभुत्व को बढ़ावा देना चाहता है।

पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र तिब्बत पर ७० साल पहले आक्रमण किया गया था और चीनी सरकार ने उन्हें चीन में शामिल किया गया था। हाल के वर्षों में राष्ट्रीय पहचान पर जोर देने के तिब्बती प्रयासों के लिए भाषा, अधिकार एक विशेष फोकस बन गए हैं। मठों और कस्बों में अनौपचारिक रूप से संगठित तिब्बती भाषा पाठ्यक्रम 'अवैध' घोषित किया जा चुका है और इसके उल्लंघन पर शिक्षकों को हिरासत में लिया जा सकता है और गिरफ्तारी किया जा सकता है।

• आईटीसीओ ने नागपुर में तिब्बत समर्थक समूह के सदस्यों के साथ कार्यक्रम आयोजित की

tibet.net, ०७ मार्च२०२२

भंडारा, महाराष्ट्र। 1 मार्च 2022 को नई दिल्ली स्थित भारत-तिब्बत समन्वय केंद्र ने नागपुर के तिब्बत समर्थक समूह के बीच एक बैठक का आयोजन किया था। इस बैठक में कोर ग्रुप के सह-संयोजक अरविंद निकोसे, आईटीसीओ के समन्वयक

जिग्मे त्सुल्ट्रिम, तिब्बतन सेटलमेंट अधिकारी कलसांगि ऋछोह, तिब्बती महिला संघ के उपाध्यक्ष छेरिंग डोल्मा, कोर ग्रुप के क्षेत्रीय संयोजक, भारत-तिब्बत मैत्री संघ के महिला विंग के सदस्य, भारत-तिब्बत सहयोग आंदोलन तथा समता सैनिक दल के सदस्य ने भाग लिया था।

तिब्बतन सेटलमेंट ऑफिसर कलसांग ऋछोह को सम्मानित करते हुए श्री अरविंद निकोसी

इस अवसर पर समन्वयक जिग्मे त्सुल्ट्रिम द्वारा अतिथियों का परिचय के बाद अरविंद निकोसे ने तिब्बत मुद्दे पर अपने विचार प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में तिब्बती महिला संघ के उपाध्यक्ष छेरिंग डोल्मा ने महिला संगठन के परिचय, इतिहास तथा उद्देश्य के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के समापन में कलसांग ऋछोह ने सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट करते हुए नोर्गीलिंग तिब्बती बस्ती के बारे में विस्तार से जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि वर्ष १९७२ में स्थापित इस बस्ती की शुरुआती समय में तिब्बतियों को यहां की गर्मियों से कई कठिनाई हुई थी। उन्होंने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि वह छह वर्ष की उम्र में तिब्बत से भारत में शरण लिया था।

• महाराष्ट्र के अमरावती में आयोजित तीसरे अखिल भारतीय आंबेडकर महिला साहित्य सम्मेलन में तिब्बती प्रतिनिधियों ने भाग ली

tibet.net, ०७ मार्च२०२२

अमरावती में आयोजित तीसरे अखिल भारतीय आंबेडकर महिला साहित्य सम्मेलन में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल

भंडारा, महाराष्ट्र। डॉ. आंबेडकर महिला संगठन ने तीसरी महिला साहित्य सम्मेलन ०२ मार्च २०२२ को अमरावती में आयोजित किया था। हर साल आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम के आमंत्रित लोगों में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल में तिब्बती महिला संघ की उपाध्यक्ष छेरिंग डोल्मा, आईटीसीओ के समन्वयक जिग्मे त्सुल्ट्रिम, नोर्गीलिंग तिब्बती कल्याण अधिकारी कलसांग क्रिछोह और तिब्बती महिला संघ की अध्यक्ष कुनसांग देचेन शामिल थे। इस साहित्य सम्मेलन में विशेष रूप से जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के प्रो. हेमलता महिश्वर, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. पुष्पा थोराट, डॉ. बी.आर. वाघमारे, डॉ. वृंदा साखरकर, डॉ. सीमा मेश्राम, आंबेडकरी साहित्य एवं संस्कृति संवर्धन महामंडल की अध्यक्ष छाया खोबरागड़े, अशोक बरबुरे और प्रशांत वंजारे सम्मानित अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

साहित्य सम्मेलन में भाग लेने के बाद तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ के वरिष्ठ सदस्य व अंबेडकर कार्यकर्ता स्वर्गीय सातेश्वर मोहरे के प्रति अपना सम्मान तथा एकजुटता प्रकट करने के लिए उनके परिजनों के साथ मुलाकात। दिवंगत मोहरे का हाल ही में निधन हुआ था।

अपने संबोधन में जिग्मे त्सुल्ट्रिम ने जोर देते हुए कहा कि तिब्बत में दमन और विश्व भर में कोविड के प्रकोप के लिए चीनी सरकार जिम्मेदार है। इसके अलावा, चीन उन डॉक्टरों के अचानक लापता होने के लिए भी जिम्मेदार है, जिन्होंने इस जानकारी को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया था। इस दिन की मुख्य चर्चा भारतीय समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति और लैंगिक समानता को लेकर डॉ. आंबेडकर की पहल पर केंद्रित रही। चर्चा में यह पक्ष भी विस्तार से आया कि कैसे डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व ने इस मुद्दे के समाधान का प्रयास किया। अंत में डॉ. हिमलता ने घोषणा की कि अगला कार्यक्रम रायपुर और फिर भोपाल में होगा।

• भारत के तिब्बत समर्थक समूहों ने ६३वां तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस मनाई

tibet.net, ११ मार्च२०२२

नई दिल्ली। तिब्बती शहीदों की याद तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दुनिया भर के तिब्बतियों और तिब्बत समर्थकों ने १० मार्च २०२२ को तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस की ६३वीं वर्षगांठ मनाई। तिब्बत पर कम्युनिस्ट चीन के अवैध कब्जे के खिलाफ १९५९ में तिब्बत की राजधानी ल्हासा में तिब्बतियों द्वारा शांतिपूर्ण आंदोलन किया था। भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने इस दिवस पर तिब्बती शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की और कम्युनिस्ट चीनी सरकार के विरोध में विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया था।

असम के तिब्बत समर्थ क समूह

झारखंड के हजारीबाग में भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने ६३वां तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस मनाई, जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर पूर्व विधेयक श्री महावीर लाल विश्वकर्मा और कई तिब्बत समर्थक उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के क्षेत्रीय संयोजक श्री सुदेश कुमार चंद्रवंशी ने की। उन्होंने इस दिन के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए तिब्बत की वर्तमान स्थिति तथा तिब्बत के अंदर की धार्मिक एवं मानवाधिकार स्थिति पर संबोधित किया था। उन्होंने तिब्बत की आज़ादी और परम पावन दलाई लामा की तिब्बत वापसी की मांग हेतु तिब्बतियों द्वारा आत्मा-बलिदान दिये जाने के बारे में जानकारी दी।

बिहार के पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, वैशाली, नवादा और सीतामढ़ी में भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने तिब्बती शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित किया तथा इस दिन को याद करते हुए तिब्बत मुक्ति साधना की विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया था। आईटीएफएस दिल्ली ने लोकनायक जयप्रकाश इंटरनेशनल स्टडीज डेवलपमेंट सेंटर के सहयोग से शाम को 'तिब्बत की आजादी और भारत की सुरक्षा' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया।

भारत-तिब्बत मैत्री संघ ने उत्तर प्रदेश के मऊ, महाराष्ट्र के भंडारा, राजस्थान के जोधपुर और ओडिशा में तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया था। बेंगलुरु में तिब्बती समुदाय तथा तिब्बत समर्थकों ने शांति प्रदर्शन में भाग लिया।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच और भारत भर में इसके चैप्टर ने ६३वें तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस को चीनी शासन द्वारा तिब्बत पर अवैध रूप से कब्जे किये जाने पर धरना व विरोध प्रदर्शन का आयोजन के साथ किया था। साथ ही उन्होंने तिब्बत के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले तिब्बती शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दिन को बीटीएसएम ने एक वीडियो जारी कर भारत सरकार और भारत के लोगों से अपने सीमा को सुरक्षित रखने तथा तिब्बत की आजादी के लिए चीन का बहिष्कार

करने की अपील की हैं।

असम में 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' ने ६३वें तिब्बती जनक्रांति दिवस पर गुवाहाटी के प्रागज्योतिष कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग के सहयोग से तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के महत्व पर एक व्याख्यान और संवादात्मक सत्र का आयोजन किया। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के क्षेत्रीय संयोजक और फ्री तिब्बत-ए वॉयस फ्रॉम असम के संयोजक श्री सौम्यदीप दत्ता इस सत्र के प्रमुख वक्ता थे। उन्होंने तिब्बत मुद्दे के प्रति समर्थन जुड़ाने के लिए भारतीय जनमानस में अधिक जागरुकता बढ़ाने से अवगत कराया।

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के क्षेत्रीय संयोजक श्रीमती रुबी मुखर्जी ने तिब्बत समर्थकों के साथ भारत स्थित चीनी वाणिज्य दूतावास के सामने कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे के खिलाफ प्रदर्शन की और तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने की मांग की।

अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह जैसे भारत-तिब्बत सहयोग मंच, भारत तिब्बत मैत्री संघ तथा अन्य तिब्बत व बौद्ध समुदाय के नेतृत्व में तवांग में एक शांति रैली का आयोजन किया था। यह रैली तवांग मठ से जनरल परेड ग्राउंड तक निकली, जिसमें कम्युनिस्ट चीनी सरकार द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे के खिलाफ नारे लगाए तथा तिब्बत की आज़ादी के लिए अपने समर्थन प्रकट की।

हिमाचल प्रदेश के भारत तिब्बत मैत्री संघ श्री विशाल ठाकुर ने मंडी में तिब्बती समुदाय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेकर इस दिवस को मनाई।

जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और पुडुचेरी में भारत-तिब्बत संवाद मंच ने तिब्बत देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले तिब्बती शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे की निंदा की और तिब्बत की स्वतंत्रता का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा की लंबी उम्र, ल्हासा के पोटाला पैलेस में उनकी अंतिम समय में वापसी और तिब्बत के लिए न्याय और जीत के लिए प्रार्थना की।

• गुरूकुल इंटर कॉलेज, हजारीबाग में 'तिब्बत के लिए एक दिन' कार्यक्रम का आयोजन

tibet.net, ०३ मार्च२०२२

हजारीबाग । बडकागांव 23
तिब्बत चीन का कभी भी अंग नहीं रहा है : जेपी जैन

गुरुकुलइंटरकॉलेज, हजारीबाग

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के क्षेत्रीय संयोजक श्री सुदेश कुमार ने ०३ मार्च २०२२ को गुरुकुल इंटर कॉलेज, हजारीबाग में 'तिब्बत के लिए एक दिन' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में डेढ़ सौ से अधिक छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री कुमार ने कम्युनिस्ट चीन की विस्तारवादी नीति और भविष्य में भारत और भारतीय उपमहाद्वीप पर पड़नेवाले इसके प्रभावों के बारे में बताया है। उन्होंने आगे तिब्बत में बिगड़ते मानवाधिकारों और पर्यावरण की स्थिति पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत के नागरिक के रुप में हमें जो उपाय करने की जरुरत है, वह चीनी उत्पाद का बहिष्कार करके और उसकी अर्थव्यवस्था को चरमराने की जरुरत है।

कॉलेज के निदेशक श्री जे. पी. जैन ने स्पष्ट रुप से कहा कि भारत ने १९५९ से पहले कभी भी चीन के साथ सीमा साझा नहीं की थी बल्कि भारत की सीमा तिब्बत से लगी थी। उन्होंने आगे कहा कि चीन ने सीमा क्षेत्र में अस्थिरता और सीमा पर तनाव पैदा किया है, जिसके कारण कई भारतीय जवानों की मौत हुई है। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री गायत्री राणा ने कहा कि चीन का तिब्बत पर कोई वैध अधिकार नहीं है और यह जबरदस्ती कब्जा किया गया देश था। जिसके कारण भारत को समय समय पर चीन द्वारा भारतीय सीमा पर घुसपैठ का सामना कर रहा है। इससे भारतीय सैनिकों की मौत हुई है। यही सही समय है कि हमें चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए और अपनी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि हम चीन का मुकाबला कर सकें और अपने क्षेत्रों की रक्षा कर सकें।

• कामराव गापा तिब्बती समुदाय ने हिमाचल के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया

tibet.net, ३१ मार्च२०२२

"एक बार फिर जय राम सरकार"
हिमाचल प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री
माननीय श्री जय ठाकुर जी

कामराव तिब्बती समुदाय ने हिमाचल के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर का स्वागत की

कामराव। तिब्बती कल्याण अधिकारी रापतेन छेरिंग और तिब्बती समुदाय के प्रतिनिधियों ने हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर का स्थानीय स्तर पर आगमन पर उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। श्री ठाकुर आज हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के कफोटा की अपनी आधिकारिक यात्रा पर आए थे।

तिब्बती कल्याण अधिकारी ने हिमाचल में रह रहें तिब्बतियों को सहायता प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री और राज्य सरकार के प्रति गहरा आभार प्रकट की। उन्होंने निर्वासन में तिब्बतियों को दशकों से समर्थन देने के लिए भारत सरकार का धन्यवाद दिया तथा मुख्यमंत्री को कामराव तिब्बती बस्ती के बारे में जानकारी दी।

• नेपाल स्थित अन्य देशों के राजदूतों ने तिब्बती लोसार उत्सव में भाग ली

tibet.net, ०७ मार्च२०२२

नेपाल स्थित विभिन्न देशों के राजदूतों के साथ लोसर मनाते हुए

काठमांडू। तिब्बती नव वर्ष-लोसार के पहले दिन काठमांडू में मठों के प्रतिनिधियों, नौकरशाहों और गैर सरकारी संगठनों के प्रमुखों ने लोसार मनाने के लिए नेपाल के तिब्बत

कार्यालय का दौरा किया। उपस्थित लोगों को परम पावन दलाई लामा का चित्र और तिब्बती पारंपरिक खटक (स्कार्फ) भेंट करने के बाद कार्यालय के सामने प्रार्थना-ध्वज फहराया गया।

ज्वालाखेल तिब्बती बस्ती के सेटलमेंट कार्यालय में मुख्य अतिथि खेंपो नवांग जॉर्डन और विशिष्ट अतिथि नेपाल में अमेरिकी राजदूत रैंडी बेरी के उपस्थिति में लोसार के तीसरे दिन का उत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम में अमेरिकी दूतावास के डिप्टी

चीफ ऑफ मिशन मैनुअल मिकलर, नेपाल में ऑस्ट्रेलियाई राजदूत फेलिसिटी वोल्क, नेपाल में ब्रिटिश राजदूत निकोला पोलिट, स्विट्जरलैंड के राजदूत एलिजाबेथ वॉन कैपेलर, फ्रांस दूतावास के डिप्टी चीफ ऑफ मिशन, नेपाल में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल, यूएनएचसीआर नेपाल का एक प्रतिनिधि, अमेरिकी दूतावास के कर्मचारी और नेपाल में मानवाधिकार गठबंधन के अध्यक्ष ने भी भाग लिया। अन्य मेहमानों में पूर्व सांसद, एलटीए के प्रमुख, बंदोबस्त अधिकारी, तिब्बती संगठनों के प्रमुख और स्थानीय तिब्बती निवासी शामिल हुए।

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह ०८ बजे अतिथियों द्वारा मंच पर परम पावन दलाई लामा के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई। इसके बाद मुख्य अतिथि और ओओटी के प्रतिनिधि ने चित्र पर मंडला अर्पित की। दोनों ने आगे लोसर की बधाई देते हुए सभा को संबोधित किया।

• स्पीकर के नेतृत्व में तिब्बती सांसदों ने यूएसएआईडी के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की

tibet.net, २३ मार्च२०२२

धर्मशाला। यूएसएआईडी के प्रतिनिधिमंडल द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के चार दिवसीय यात्रा के दौरान २२ मार्च २०२२ को छोहनोर हाउस, मैक्लोड गंज में निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सांसदों के साथ रात्रिभोज का आयोजन किया गया। प्रतिनिधिमंडल के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक संस्थान के अधिकारी भी बैठक में मौजूद थे।

निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के साथ यूएसएआईडी के प्रतिनिधि मंडल

बैठक में विभिन्न विषयों पर गंभीरता से बातचीत हुई। इसमें इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे संस्थान हर क्षेत्र में टीपीआईई को सुधारने और विकसित करने की जरूरतों को विस्तार और समृद्ध करने में निर्वासित तिब्बती संसद का समर्थन कर सकते हैं। यह एक संवादात्मक बैठक थी। प्रतिनिधिमंडल को तिब्बत की वर्तमान स्थिति और निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज के बारे में भी अवगत कराया गया।

बैठक अधिक समझ और स्पष्टता के साथ मिलकर काम करना जारी रखने के लिए आशा और उत्साह के साथ संपन्न हुई।

• 'हम तिब्बत को आज़ाद करने की संकल्प से अपना समर्थन देने आए हैं': चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जिरी ओबरफेल्ज़र

tibet.net, १० मार्च२०२२

धर्मशाला। १० मार्च की सुबह तिब्बती मुख्य मंदिर में आयोजित तिब्बती जनक्रांति दिवस की ६३वीं वर्षगांठ के आधिकारिक समारोह के बाद चेक सीनेट के उपाध्यक्ष माननीय जिरी ओबरफेल्ज़र के नेतृत्व में चेक प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत मुद्दे पर धर्मशाला स्थित मीडियाकर्मी को संबोधित किया था।

परम पवन दलाई लामा के साथ चेक सीनेट के उपाध्यक्ष श्री जिरी ओबरफेल्ज़र

चेक सीनेट के उपाध्यक्ष ने तिब्बती मीडिया से कहा कि, 'हमारा संदेश बहुत साफ है। हम तिब्बत को आज़ाद करने के लिए अपना समर्थन देने और व्यक्त करने के लिए चेक गणराज्य से आए हैं। चेक गणराज्य की सरकार और लोग इस दोस्ती को जारी रखने और तिब्बत का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

उन्होंने कहा कि चेक गणराज्य और तिब्बतियों के बीच दोस्ती तब अधिक मजबूत हुई जब परम पावन दलाई लामा ने २००० में पूर्व राष्ट्रपति वैक्लव हॉवेल के निमंत्रण पर चेक गणराज्य का दौरा किया था। तब से परम पावन ने पिछले १६ वर्षों में सात बार चेक गणराज्य का दौरा किया है। परम पावन ने आखिरी बार २०१६ में वहां का दौरा किया था।

उपाध्यक्ष जिरी ओबरफेल्जर ने आगे कहा, 'हम इसी तरह के ऐतिहासिक विकास से गुजरे हैं। इसलिए हम दमन के अधीन रहने वाले तिब्बतियों की दुर्दशा, दमन के कारण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अपने देश पर शासन करने की स्वतंत्रता के नुकसान को अच्छी तरह समझते हैं। यह हमें तिब्बती मुद्दे के लिए खुले तौर पर अपना समर्थन व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।'

उन्होंने कठिनाइयों के बावजूद तिब्बत के अंदर रह रहे तिब्बतियों को अपनी आशा को जीवित रखने के मुद्दे पर कहा कि, चीन ने हमें राजनीतिक रूप से कब्जा किया है लेकिन हम बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के माध्यम से पूरे चीन पर कब्जा कर सकते हैं।

इससे पहले आज, प्रतिनिधिमंडल का परम पावन दलाई लामा के साथ उनके आवास पर विशेष श्रोताओं के रूप में स्वागत किया गया। उनकी बैठक के दौरान परम पावन ने १० मार्च के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला और बाद में निर्वासन में अपने पलायन की कहानी सुनाई। परम पावन ने उनके साथ एकता की भावना को बढ़ावा देने और असमानताओं पर काबू पाने पर बल देते हुए एक शांतिपूर्ण और करुणामय विश्व बनाने पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

अपनी समापन टिप्पणी में चेक गणराज्य के सीनेट के उपाध्यक्ष ने बहुत आशावाद के साथ तिब्बती मुद्दे पर अथक प्रयास करने के लिए सिक्योंग और तिब्बती संसद के सदस्यों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्षय ने चेक गणराज्य की सीनेट उपाध्यक्ष और उनके प्रतिनिधिमंडल के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि 'यह आगमन दुनिया भर के तिब्बतियों को एकजुटता और आशा का एक मजबूत संदेश देता है, और इससे तिब्बती आंदोलन को फिर से सक्रिय करता है।'

• राज्यसभा सांसद अमरेंद्र धारी सिंह निर्वासित तिब्बती संसद में आए

tibet.net, ११ मार्च२०२२

धर्मशाला। भारतीय संसद के राज्यसभा सदस्य श्री अमरेंद्र धारी सिंह ने ०९ मार्च २०२२ को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया था। वह तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस को आधिकारिक समारोह में विशेष अतिथि के रुप में भाग ले रहे थे।

निर्वासित तिब्बती सांसदों के साथ राज्यसभा के सांसद अमरेंद्र धारी सिंह

तिब्बती संसद में आगमन पर अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल और उपाध्यक्ष डोल्मा त्सेरिंग तेखांग के नेतृत्व में स्थायी समिति के सदस्यों ने उनका अभिनंदन किया।

भारतीय संसद को डिप्टी स्पीकर द्वारा स्थायी समिति के प्रत्येक सदस्य से मिलवाया गया और उन्हें विकास, सत्र और संसद की संरचना सहित कई मुद्दों पर जानकारी दी गई। भारतीय संसद ने स्थायी समिति के सदस्यों से चीनी शासन के अधीन रहने के दौरान उनके द्वारा भुगती गई कठिनाइयों के बारे में पूछताछ की और चीन द्वारा तिब्बत में तिब्बती खानाबदोशों के जबरदस्ती 'पुनर्स्थापन', तिब्बत में कीमती खनिजों की निकासी और कई अन्य मुद्दों पर चर्चा की।

स्पीकर ने भारतीय संसद में तिब्बत के मुद्दे को उठाने और तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस के आधिकारिक समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए श्री ए.डी. सिंह का आभार व्यक्त की। उन्होंने सदियों की साझा संस्कृति और धर्म के साथ भारत और तिब्बत की दोस्ती की सराहना की। उन्होंने आगे तिब्बतियों को सुविधाएं और सहायता प्रदान करने के लिए छह दशकों से अधिक समय तक तिब्बतियों की मेजबानी करने के लिए भारत और उसके लोगों को धन्यवाद दिया।

राज्यसभा सदस्य ने तिब्बत के मुद्दे के लिए पूर्ण समर्थन और तिब्बतियों के साथ अपनी एकजुटता का आश्वासन दिया। बैठक समाप्त करने से पहले अध्यक्ष द्वारा निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से श्री ए.डी. सिंह को बुद्ध की एक थंगका पेंटिंग भेंट की गई।

• तिब्बती प्रतिनिधि ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सत्र के दौरान तिब्बत को याद किया

tibet.net, ०९ मार्च२०२२

जिनेवा। एक तिब्बती प्रतिनिधि ने जिनेवा में चल रहे ४९वें संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सत्र में १० मार्च १९५९ को तिब्बत पर हुए चीनी आक्रमण और तिब्बती लोगों के दुखद भाग्य को याद किया और उस पर विचार की। वीडियो बयान के माध्यम से मौखिक हस्तक्षेप करते हुए तिब्बत ब्यूरो में संयुक्त राष्ट्र वकालत अधिकारी कलडेन छोमो ने संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त के संबोधन का स्वागत करते हुए कहा कि 'चीन के अधिकृत क्षेत्रों में मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए कार्रवाई लंबे समय से नहीं हुई है।'

कालदेन छोमो

जैसा कि दुनिया के सामने यूक्रेन में मानवाधिकारों के खतरनाक उल्लंघन और मानवीय संकटों की घटनाएं सामने आ रही है, इसी संदर्भ में उन्होंने चीनी घुसपैठ के परिणामस्वरूप तिब्बती लोगों के ऐसे ही दुखद भाग्य को याद किया। ६३वें तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस के अवसर पर उन्होंने कहा, '१० मार्च १९५९ को हजारों तिब्बती चीनी प्रभुत्व का विरोध करते हुए पोटाला महल की सड़क पर उतर आए थे'। कलडेन छोमो ने कहा कि फ्रीडम हाउस की रिपोर्ट के अनुसार तिब्बत को रहने के लिए फिर से सबसे कम आजाद स्थान का दर्जा दिया गया है।

काल्डेन छोमो ने अपने मौखिक हस्तक्षेप के अंत में कहा, 'हम उच्चायुक्त से चीन को इस बात के लिए राजी करने की अपील करते हैं कि वे तिब्बती लोगों की अंतर्निहित शिकायतों को दूर करने के लिए तिब्बती अधिकार रक्षकों और सामाजिक अधिकारों के पैरोकारों को डराने और उत्पीड़न करने के बजाय चीन से निर्वासित तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व के साथ एक सार्थक बातचीत शुरू करने का आह्वान करें।'

• तिब्बती जनक्रांति दिवस की ६३वीं वर्षगांठ पर ताइवान के संसदीय मानवाधिकार आयोग और तिब्बत के संसदीय समूह का वक्तव्य

tibet.net, २८ मार्च२०२२

तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि श्री केलसंग ग्यालत्सेन के साथ ताइवान के संसद

ताइपे। ताइवान के 'संसदीय मानवाधिकार आयोग' और 'तिब्बत के लिए ताइवान के संसदीय समूह' ने संयुक्त रुप से तिब्बती लोगों को समर्थन देने की घोषणा जारी की और १० मार्च २०२२ को तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस की ६३ वीं वर्षगांठ पर एक प्रेस बयान में चीनी सरकार की निंदा की।

चीनी में जारी प्रेस वक्तव्य में कहा गया है-

एक तानाशाह ने २१वीं सदी में अपने देश की सारी सैन्य शक्ति का इस्तेमाल कर दूसरे देश पर बेशर्मी से हमला कर दिया है। लेकिन पीड़ित देश ने निडर होकर आक्रांता देश से युद्ध करके पूरी दुनिया को चकित कर दिया है। ताइवान और कई अन्य देशों ने ऐसे साहसी देश का समर्थन किया है। यह पीड़ित देश कोई और नहीं, यूक्रेन है।

६३ साल पहले इसी दिन तिब्बत की राजधानी ल्हासा में इसी तरह की घटना हुई थी, जहां एक अधिनायकवादी शासन के आक्रमण का तिब्बतियों ने बहादुरी से मुकाबला किया था, लेकिन जिसे अंततः हिंसक तरीके से दबा दिया गया था। हालांकि १० मार्च १९५९ को पीएलए के आक्रमण के दौरान हताहत हुए तिब्बतियों की सही संख्या अभी भी अज्ञात है, लेकिन यह सच्चाई है कि दमन के दौरान हज़ारों तिब्बतियों ने अपनी जान गंवाई और परम पावन दलाई लामा को तिब्बत छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। तब से तिब्बती लोग कम्युनिस्ट शासन द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक

और धार्मिक संहार को झेल रहा है।
७४ साल पहले ताइपे में भी इसी तरह से एक विदेशी शक्ति के खिलाफ विद्रोह का उभार हुआ था। विदेशी शक्ति ने तब भी उस विद्रोह को दबाने के लिए सैन्य बल का इस्तेमाल किया था। आज इस घटना को ताइवान में २२८ स्मृति दिवस के रूप में मनाया गया।
सांस्कृतिक और धार्मिक असमानताओं के बावजूद, मानवाधिकारों के संरक्षण और स्वतंत्रता की लड़ाई के उद्देश्य यूक्रेन, तिब्बत और ताइवान में समान रहे हैं। इसी तरह, व्यवस्थागत भिन्नता के बावजूद उत्पीड़कों की प्रचार मशीनरी का बिल्कुल एक ही तरह का बेशर्म मकसद है और वह अन्य लोगों को गुलाम बनाकर रखना है। हालांकि वे इस मकसद को छुपाकर रखते हैं।
डॉ मार्टिन लूथर किंग ने एक बार कहा था कि किसी एक भी स्थान पर अन्याय, हर जगह न्याय के लिए खतरा है। इसलिए हम यूक्रेनी और तिब्बती लोगों की भावनाओं को समझते हैं क्योंकि हम सभी इंसान हैं और हम सभी में सहानुभूति है।
अब जब हम ६३वां तिब्बती जनक्रांति दिवस को मना रहे हैं, तो हम यूक्रेन के लोगों के साथ भी एकजुटता व्यक्त करते हैं और ताइवान के लोगों को भी यह याद दिलाना चाहेंगे कि हमारी स्वतंत्रता और लोकतंत्र भी खतरे में है।
तिब्बतियों का खून हमें याद दिलाता है कि ताइवान को कम्युनिस्ट पार्टी में कोई विश्वास नहीं हो सकता है और यूक्रेनी लोगों की बहादुरी हमें याद दिलाती है कि केवल साहसी प्रतिरोध के माध्यम से ही हम अंततः अपनी कड़ी मेहनत से प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं। साथ ही हमें आज अपनी स्वतंत्रता का उपयोग उन सभी लोगों की मदद करने और उन्हें प्रेरित करना चाहिए जिनकी स्वतंत्रता का उल्लंघन किया गया है।
इन सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए 'ताइवानी संसदीय मानवाधिकार आयोग' ने आज यह बयान तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस की ६३वीं वर्षगांठ पर दिया है। यह बयान यूक्रेनी लोगों द्वारा अभी भी आक्रमणकारियों के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई लड़ने के अवसर पर उनके लिए भी है। यह बयान यूक्रेन के मानवाधिकार, स्वतंत्रता और आजादी के प्रति ताइवान के अटूट समर्थन को व्यक्त करने के लिए भी है।

• ल्हासा में तिब्बती गायक के आत्मदाह से चीनी उत्पीडन के बारे में पता चलता है

छेवांग नोरबू १५८वें तिब्बती हैं जिन्होंने चीनी उत्पीड़न के विरोध में तिब्बत में आत्मदाह कर लिया था।
rfa.org, २९ मार्च २०२२, दोरजीवांग्मो

ल्हासा में ऐतिहासिक पोटाला पैलेस के सामने एक तिब्बती द्वारा आत्मदाह की ख़बर बाहरी दुनिया तक पहुंचने में एक महीने से थोड़ा अधिक समय लग गया है।
०५ मार्च तक निर्वासन में तिब्बती मीडिया के पास उस अकेले प्रदर्शनकारी द्वारा आत्मदाह किये जाने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। ०४ मार्च को रेडियो फ्री एशिया ने बताया कि पोटाला पैलेस के सामने जिस तिब्बती ने आत्मदाह किया था वह और कोई नहीं लोकप्रिय तिब्बती संगीतकार २५ वर्षीय छेवांग नोरबू थे।
निर्वासन में रह रहे तिब्बती कह रहे हैं कि तिब्बत के भीतर स्वतंत्रता की कमी और सेंसरशिप जैसी कठोर नीतियां तिब्बतियों को छेवांग नोरबू जैसे कठोर कदम उठाने के लिए मजबूर कर रही हैं। इसी कारण से वे अपने देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर रहे हैं।
निर्वासित तिब्बतियों का कहना है कि छेवांग नोरबू के बारे में समाचार की पुष्टि करने में आई कठिनाई से ही चीनी अत्याचारों और तिब्बत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कमी को प्रमाणित किया जा सकता है। वे तिब्बत में चीनी सरकार की दमनकारी नीतियों को समाप्त करने की मांग करते हैं।
तिब्बती युवा कांग्रेस के अध्यक्ष गोंपो धुंडुप ने कहा कि नोरबू ने अपने शरीर को ज्वलनशील मिट्टी के तेल से भिगोया और 'तिब्बत पर चीनियों द्वारा थोपी गई निरोधात्मक और दमनकारी नीतियों का विरोध करते हुए' शरीर को आग के हवाले कर दिया।
नोरबू तिब्बत के भीतर १५८वें तिब्बती हैं, जिन्होंने विरोध के तौर पर आत्मदाह कर लिया है। निर्वासन में १० तिब्बतियों ने भी पिछले दो दशकों में आत्मदाह किया है।
१९५० के दशक से तिब्बत में रह रहे तिब्बती और निर्वासित तिब्बती दुनिया भर में शांतिपूर्ण प्रदर्शनों के माध्यम से तिब्बत पर कब्जे और मानवाधिकारों के उल्लंघन का विरोध कर रहे हैं।
तिब्बती युवा कांग्रेस (टीवाईसी) कई तिब्बती अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों में से एक है, जो चीन से तिब्बत की स्वतंत्रता की वकालत करता है। टीवाईसी अपनी मांग के समर्थन में पिछले ६० वर्षों में धरना, उपवास, अभियान, शांतिपूर्ण प्रदर्शन आदि का आयोजन कर रहा है। धोंडुप ने कहा मूक बना दिए गए तिब्बतियों की आवाज सीसीपी द्वारा लगाए गए गंभीर सेंसरशिप के कारण दबी हुई है।
नोरबू के एक करीबी रिश्तेदार और १६वीं निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य नवांग थारपा वॉयस ऑफ अमेरिका पर देखे गए समाचार को याद करते हुए कहते हैं, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा था'।
थारपा ने तिब्बत में अपने रिश्तेदारों को यह जानने के लिए फोन की कि निर्वासन में वे जो सुन रहे हैं, क्या वे इस बात की पुष्टि कर सकते हैं। लेकिन रिश्तेदारों ने उससे कहा कि 'स्पष्ट जानकारी प्राप्त करना मुश्किल है'। हालांकि, बाद में उन्होंने इस बात की पुष्टि करने के लिए एक और स्रोत खोज लिया। उन्हें पुष्टि हो गई कि आत्मदाह करने वाले छेवांग नोरबू थे जिसकी मृत्यु आत्मदाह करने के बाद चोट खाने से हुई है।
थारपा तिब्बती समाचार आउटलेट 'भोडकी बांगचेन' में तिब्बती पत्रकार हुआ करते थे और अपने पूर्व तिब्बती पत्रकार सहयोगियों से उन्हें समाचारों का आदान- प्रदान हो जाता है।
थारपा के अनुसार, छेवांग नोरबू अपने संगीतकार पिता की संगीत की धुनों को सुनते हुए बड़े हुए। उनकी मां तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र के नाग्चू जिले में पहले स्वर्ण पदक विजेता गायकों में से एक थीं। चीन के राष्ट्रीय संगीत मंचों पर प्रतियोगिताओं और तिब्बत में शांति के गीत गाते हुए वे लाखों तिब्बतियों के लिए आशा के प्रतीक बन गए थे।
२०२० के एक संगीत वीडियो 'रिटर्निंग होम' में वह खाम क्षेत्र का पारंपरिक तिब्बती चुपा पहने हुए अपनी मातृभूमि नागछू के बारे में गीत गाते हुए दिखाई दे रहे हैं। गीत के बोल कुछ इस तरह हैं- 'घास का मैदान विशाल है, पशुधन कई हैं, आपके लिए मेरी लालसा पहले से अधिक मजबूत है। तुम मेरे सपनों का दायरा हो, कोई और विकल्प नहीं है कि मैं तुम्हें भूल जाऊं।'
एक अन्य वीडियो में वह एक राष्ट्रीय चीनी प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं और अपना गीत 'त्सम्पा' गा रहे हैं जो एक पारंपरिक तिब्बती प्रधान भोजन के बारे में है। गीत का सार हैं- 'मैं आपकी स्तुति करता हूं, आपने मुझे अपना सारा जीवन दिया है, आप हमारी जिंदगी हैं, आपने मेरी सभी आकांक्षाएं और आशाएं प्रदान की जाती हैं।'
लेकिन अब, उनके पास उनके वेबो अकाउंट (एक लोकप्रिय चीनी माइक्रोब्लॉगिंग साइट) पर मुस्कुराते हुए और अपने प्रशंसकों का अभिवादन करते हुए उनके पुराने वीडियो हैं। इंटरनेट पर चीनी सेंसरशिप के बावजूद उन्होंने काफी लोकप्रियता हासिल की थी और अब भी वायरल हो रहे हैं।
थारपा ने कहा, 'नोरबू बचपन से ही एक अच्छे बच्चा रहे हैं। वह कभी कसम नहीं खाते और शाकाहारी थे। ड्रिरु काउंटी के उनके गृहनगर नागछू जिले में मजाक में कहा जाता है कि शाकाहारी होने का मतलब है कि आप एक दयालु व्यक्ति हैं। छेवांग नोरबू के बारे में यह सच था।'
नोरबू गीतों के एक अच्छे लेखक और संगीतकार के रूप में जाने जाते थे। थारपा ने कहा कि वह एक वादक भी थे। थारपा ने कहा, 'वह तिब्बती साहित्य में पारंगत थे और विशेष रूप से अपनी शब्दावली और गीतों के लिए जाने जाते थे।'
थारपा की तरह अन्य तिब्बती संगठन भी नोरबू के विरोध और उसके बाद की घटनाओं के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।
सोनम तोबग्याल तिब्बत वॉच में एक शोधकर्ता हैं जो तिब्बत में मानवाधिकारों की

निगरानी, शोध और वकालत करने वाली संस्था है। उनका संगठन आज तक स्वतंत्र रुप से यह सत्यापित नहीं कर पाया है कि उनके विरोध के बाद नोरबू के साथ क्या हुआ था।
उन्होंने कहा, 'हम उनकी वर्तमान स्थिति की पुष्टि करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन हमने अभी भी यह पता नहीं लगाया है कि वह जीवित हैं या अस्पताल में भर्ती हैं या उसका निधन हो गया है।'
हालांकि, निर्वासन में अधिकांश तिब्बती मीडिया संगठनों ने ०२ मार्च को ल्हासा में तिब्बत के पीपुल्स अस्पताल में नोरबू की मृत्यु की सूचना दी है।

थारपा का दावा है कि तिब्बत में सूचनाओं को दबाने और उन्हें बाहर न निकलने देने की सीसीपी की रणनीति से निर्वासित तिब्बतियों में भ्रम पैदा हो गया है। इससे तिब्बती मीडिया में अधूरी खबरें आ रही हैं और आम जनता के बीच भ्रम की स्थिति बताई जा रही है। उन्होंने कहा, 'अब भी आबादी के एक खास वर्ग के बीच इस बात को लेकर संदेह है कि उनकी मृत्यु हो गई है या नहीं।
तिब्बत वॉच से जुड़ी पेमा ग्याल ने नोरबू के बारे में स्पष्ट जानकारी की कमी के लिए तिब्बत में सीसीपी की २०१७ की इंटरनेट सेंसरशिप नीति को जिम्मेदार ठहराया।
उन्होंने कहा, 'सीसीपी तिब्बतियों के मौलिक मानवाधिकारों का उल्लंघन करके झूठ तंत्र का दुष्प्रचार और गलत तरीके से निगरानी कर रही है।' ग्याल ने कहा कि उनका दावा है कि यह 'राज्य की गोपनीयता की रक्षा करने और तिब्बतियों सहित देश में विभिन्न जातियों के बीच तथाकथित अलगाववाद से बचने के लिए' है।
०६ नवंबर २०१७ को नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति ने लोगों को 'समाजवादी व्यवस्था को उलटने, अलगाववाद को उकसाने' या 'राष्ट्रीय एकता को तोड़ने' से रोकने के लिए एक साइबर सुरक्षा कानून लागू किया। लेकिन नीति विशेषज्ञ चेतावनी देते रहे हैं कि यह तिब्बत के अंदर लोगों की आवाज़ को सेंसर करने का एक और प्रयास है।
दशकों से चीन ने परम पावन दलाई लामा और निर्वासन में रह रहें तिब्बतियों को 'अलगाववादी' के रूप में प्रचारित किया है। वे कहते हैं कि यह 'चीनी मातृभूमि' को नस्लीय रुप से विभाजित कर रहे है।
ग्याल ने कहा कि, 'तिब्बत में तिब्बतियों को बीमार तथा मृत लोगों के प्रति प्रार्थना करने की भी अनुमति नहीं है। ये प्रार्थनाएं मुख्य रुप से दलाई लामा द्वारा दी जाती हैं।
नोरबू के चाचा सुंगखर लोडोह ग्यामत्सो तिब्बत में सबसे लंबे समय तक सजा काटने वाले राजनीतिक कैदियों में से एक हैं। थारपा के अनुसार, २१ साल जेल की सजा काटने के बाद २०१५ में ड्रिरु काउंटी में सीसीपी द्वारा जानवरों की खाल की पोशाक पहनना लागू करने के विरोध में ग्यामस्तो को गिरफ्तार किया गया था। थारपा ने कहा, 'पिछले साल उन्हें चीनी कम्यूनिस्ट द्वारा तिब्बती भाषा को नष्ट किये जाने के विरोध करने के लिए फिर से गिरफ्तार किया गया था।'

कहा जाता है कि नोरबू ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा के प्रसिद्ध पोटाला पैलेस में खुद को आग के हवाले कर लिया था। आश्चर्य की बात यह है कि हजारों की संख्या में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के जवानों की मौजूदगी के बावजूद घटना की कोई फिल्म या तस्वीरें जारी नहीं की गई है।
थारपा ने कहा कि तिब्बत के अंदर के उनके सूत्रों ने बताया कि नोरबू अपनी गाड़ी से पोटाला महल की ओर नारे लगाते हुए जा रहे थे। थारपा के सूत्रों अनुसार, नोरबू ने गाड़ी की छत पर चढ़ कर नारेबाजी लगाई थी। उन्होंने नारे लगाते हुए ही अपने शरीर पर मिट्टी का तेल उड़ेल लिया और चीनी शासन के खिलाफ जोर से नारे लगाते हुए अपने शरीर में आग लगा ली। उस समय हजारों लोग उनकी तस्वीरें तथा वीडियो बना रहे थे, लेकिन कोई बचाने को आगे नहीं आया।
थारपा ने कहा कि पूरे ल्हासा में कई निगरानी कैमरे लगे हैं। उन्हें यहां तक बताया कि सड़क पर चल रहे कई लोगों ने आत्मादाह की विरोध को देखा है और इसे अपने फोन में फिल्म बनाया था। हालांकि, थारपा ने कहा, 'इन तस्वीरों को साझा करने पर गवाहों की जान को खतरा है।'
ग्याल के अनुसार, हर बार जब तिब्बती आत्मदाह या शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते हैं तो सीसीपी तिब्बत में सुरक्षा कड़ी कर देती है, जिसमें हजारों सशस्त्र पीएलए सैनिक प्रत्येक काउंटी के अंदर इस तरह से मार्च करते हैं कि 'हवा का बहना भी लगभग मुश्किल हो जाता है।'

पहले के विपरीत अब आत्मदाह करने वाले शहीद के परिवार के साथ-साथ पूरे मोहल्ले में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाया जाता है और उनकी जासूसी की जा रही है।
ग्याल ने कहा, 'आत्मदाह करने वाले के परिवार को आजीवन नजरबंद रखा जाता है और अगर परिवार भागने का फैसला करता है तो सीसीपी यह कहते हुए कहानी को पलट देती है कि उस व्यक्ति ने आत्मदाह किया है क्योंकि वह मानसिक रुप से अस्थिर था या उसे पारिवारिक परेशानियां थी। इसके अलावा भी वह तरह-तरह की झूठी कहानियां गढ़ी जाती हैं।

इसके अलावा यदि आत्मदाह करने वाले व्यक्ति की मौत नहीं होती है तो यह उसके लिए और भी बुरा हो सकता है।
ग्याल ने कहा, 'सीसीपी उस पीड़ित व्यक्ति को यह बयान देने के लिए धमकी देगी कि उसने यह कार्य व्यक्तिगत कारणों से किया था, अन्यथा उसके परिवार को परेशान किया जाएगा।'

एक तरफ जहां दुनिया के सबसे कम स्वतंत्र देशों की श्रेणी में आनेवाले सीरिया के समाचारों को दुनिया के बाकी हिस्सों तक पहुंचने में लगभग एक दिन का समय लगता है, वहीं थारपा का दावा है कि तिब्बत के अंदर की स्थितियों के बारे में जानकारियों को चीन की बाहरी सीमाओं तक पहुंचने में महीनों या वर्षों का समय लग जाता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि फ्रीडम हाउस के २०२१ के राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता संबंधी अध्ययन 'विश्व की स्वतंत्रता' में तिब्बत को 'स्वतंत्र नही' का दर्जा दिया गया है।

उदाहरण के लिए, १७ सितंबर २०१५ को स्थानीय समयानुसार दोपहर १ बजे २६ वर्षीय शुरमो ने ड्रिरु काउंटी के शगछुखा गांव में एक बस स्टेशन के पास खुद को आग लगा ली। लेकिन इस खबर को तिब्बत से बाहर आने में पांच साल लग गए, २०२० में यह जानकारी बाहर आई, वह भी बिना किसी स्पष्ट जानकारी के।

थारपा ने कहा, 'तिब्बत एक बंद दरवाजा बन गया है।'
ऐसी परिस्थितियों में निर्वासन में रह रहे तिब्बती समुदाय, तिब्बत में अपने परिवार के सदस्यों से संपर्क नहीं कर पा रहे हैं।
बेंगलुरु विश्वविद्यालय के अंर्तगत दलाई लामा इंस्टीट्यूट फॉर हायर स्टडीज की छात्रा डोलकर त्सो के माता-पिता तिब्बत के अमदो क्षेत्र में रहते हैं। हालांकि पहले वह नियमित रूप से वीचैट के माध्यम से उनसे बात करती थी, लेकिन अब उसने कहा कि, 'नोरबू के बलिदान के बाद मैं अपने परिजानों से बात नहीं कर पा रहा हूं। और भारत में मेरे चाचा ने मुझे सचेत किया कि मैं अपने माता-पिता से संपर्क न करे, क्योंकि इससे उनकी जान को खतरा है। हालांकि यह घटना हमारे इलाके में नहीं हुई, लेकिन पूरे तिब्बत में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है।'

व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि चीन में प्रतिबंधित हो जाने के बाद से तिब्बत में परिवार के सदस्यों से जुड़ने के लिए त्सो भारत में प्रतिबंधित एक चीनी ऐप 'वीचैट' का वीपीएन पते बदलकर उपयोग कर रही है।

उसने कहा, 'सामान्य दिनों में भी हम राजनीति, दलाई लामा और तिब्बत के अंदर की स्थितियों के बारे में बात नहीं कर सकते हैं और जब हम ऐसा करते हैं तो मेरी मां हमेशा मुझे कोड वर्ड या पालतू नामों का उपयोग करने के लिए कहती हैं।' उसने उस समय को याद किया जब उसके माता-पिता एक वीडियो कॉल के दौरान उसकी प्रोफ़ाइल नहीं देख पा रहे थे और यह काला दिखाई देता रहा, क्योंकि उसने अपनी प्रोफ़ाइल में दलाई लामा की एक तस्वीर लगाई थी।

तिब्बत के अंदर की स्थितियों के बारे में खोजी शोधकर्ता होने और अंतरराष्ट्रीय मीडिया के लिए काम करने वाले ग्याल ने कहा, '२०१८ के बाद से सीसीपी ने मेरे परिवार और मेरे बीच संचार को अवरुद्ध कर दिया है और मैं उनसे संपर्क करने में सक्षम नहीं हूं। यहां तक कि 'वीबो' और 'वीचैट' पर मेरे दोस्तों को भी मुझे ब्लॉक करना पड़ता है। फिर भी, कुछ तिब्बती मेरे संपर्क में आने के कारण जेल में हैं।'

ड्रिरु काउंटी के नागछू नोरबू का गृहनगर है जहां आठ तिब्बतियों ने आत्म-बलिदान दिया था इसलिए यह क्षेत्र पूरे तिब्बत में सबसे नियंत्रण वालें इलाकों में माना जाता है। तिब्बत के नागछू क्षेत्र में चीनी शासन द्वारा तिब्बती मठों की विनाश, तिब्बती भाषा की हशियाकारण, मठों में पितृसत्तात्मक पुनर्शिक्षा तथा अन्य कई विषयों के खिलाफ तिब्बतियों द्वारा विरोध करने के लिए अधिक निगरानी बड़ा दिया है। सोकतोह क्षेत्र इससे भी बदतर है। थारपा ने कहा, 'यहां २०१७ से इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा दिया गया है जब क्षेत्र में पर्यावरण संबंधी खनन के खिलाफ विशाल प्रदर्शन हुआ था।'

अंत में, छेवांग नोरबू का आत्मदाह कोई अकेली घटना नहीं है। यह चीनी दमन और तिब्बत में सेंसरशिप को बेनकाब करने के प्रयासों के खिलाफ चल रही एक बड़ी लड़ाई का हिस्सा है। तिब्बत के भीतर स्वतंत्रता के लिए खुद को आग लगाने वाले तिब्बतियों की लंबी कतार को समाप्त करने के लिए चीन को तिब्बत में 'अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता' के खिलाफ प्रतिबंधों और अत्याचार को बंद करना चाहिए।

लेखक चेन्नई के एशियन कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म के छात्र हैं। यहां व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं।

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

March, 2022, Years: 43 Issue: 03 Regd No. : RNI 34636-79

ताइवान तिब्बत कार्यालय के प्रति निधि कालसँग ग्यालत्सेन के साथ ताइवान के सांसद

६३वां तिब्बती राष्ट्रीय जन क्रांति दिवस पर तिब्बत समर्थक समूहों द्वारा विशाल प्रदर्शन